इंडियन रेलवे फाइनेंस कॉरपोरेशन
(रेल मंत्रालय का नवरत्न उपक्रम)
भविष्य पथ पर

उड़ान

(आठवां अंक)

आई.आर.एफ.सी. की हिंदी की छमाही ई-पत्रिका



इंडियन रेलवे फाइनेंस कॉरपोरेशन लिमिटेड

यूजी फ्लोर, ईस्ट टावर, एनबीसीसी प्लेस, भीष्म पितामह मार्ग, प्रगति विहार, लोधी रोड, नई दिल्ली – 110003

इंडियन रेलवे फाइनेंस कॉरपोरेशन
(रेल मंत्रालय का नवरत्न उपक्रम)
भविष्य पथ पर

उड़ान

(आठवां अंक)

आई.आर.एफ.सी. की हिंदी की छमाही ई-पत्रिका

अनुक्रमणिका | अंक – आठवां (अप्रैल, 2025 से सितंबर, 2025 छमाही) | वर्ष 2025

01. रेल मंत्री का संदेश
02. सदस्य (वित्त) का पत्र
03. अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से
04. निदेशक (वित्त) का संबोधन
05. कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन एवं प्रशासन) का संदेश
06. पाठकों के पत्र
07. आईआरएफसी की व्यावसायिक उपलब्धियां
08. आईआरएफसी द्वारा हिंदी के प्रयोग-प्रसार के लिए किए गए विशेष प्रयास एवं उपलब्धियां
09. अपना घर - कविता
10. Thanks to Reels..... - कविता
11. नई पीढ़ी की चुनौतियां - लेख
12. सार्वजनिक खरीद में कृत्रिम बुद्धिमत्ता: अधिकारियों को सशक्त बनाते हुए, पारदर्शिता को बढ़ावा - लेख
13. श्री वेंकटेश्वर स्वामी - लेख
14. सोन की तलाश में — अमरकंटक की ओर मेरा सफ़र – यात्रा वृत्तांत
15. आईआरएफसी कार्यालय में आयोजित हिंदी कार्यशाला की झलकियां (दिनांक: 09 जून, 2025)
16. एनटीपीसी और आईआरएफसी के बीच ऋण समझौते पर हस्ताक्षर समारोह (दिनांक: 10 जून, 2025)
17. आईआरएफसी कार्यालय में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, 2025 की झलकियां (दिनांक: 21 जून, 2025)
18. आईआरएफसी कार्यालय में आयोजित 109वीं राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की झलकियां (दिनांक: 26 जून, 2025)
19. अपर सदस्य राजस्व, श्री डॉ. नवल के. श्रीवास्तव के विदाई समारोह की झलकियां (दिनांक: 26.06.2025)
20. आईआरएफसी कार्यालय में स्वच्छता अभियान के तहत आयोजित नुक्कड़ नाटक की झलकियां (दिनांक: 11.08.2025)
21. आईआरएफसी कार्यालय में स्वच्छता अभियान के तहत पौधारोपण की झलकियां (दिनांक: 11.08.2025)
22. मौसम - कविता
23. आज़ादी - कविता
24. प्रदूषण... एक आपदा या अवसर - लेख
25. हिंदी दिवस - लेख
26. आईआरएफसी कार्यालय में स्वच्छता अभियान की झलकियां (दिनांक: 11.08.2025)
27. आईआरएफसी कार्यालय में स्वच्छता अभियान के तहत जागरूकता के लिए हस्ताक्षर अभियान की झलकियां (दिनांक: 11.08.2025)
28. आईआरएफसी कार्यालय में स्वच्छता अभियान के तहत शपथ समारोह की झलकियां (दिनांक: 11.08.2025)
29. आईआरएफसी कार्यालय में आयोजित स्वतंत्रता दिवस की झलकियां (दिनांक: 15.08.2025)
30. आईआरएफसी कार्यालय में आयोजित स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर हिंदी की गृह पत्रिका "उड़ान" के सातवें अंक के विमोचन की झलकियां (दिनांक: 15.08.2025)
31. नराकास की छमाही बैठक में छमाही ई-पत्रिका "उड़ान" के लिए आईआरएफसी को प्राप्त शील्ड पुरस्कार (दिनांक: 20.08.2025)
32. आईआरएफसी द्वारा आयोजित 38वीं वार्षिक आम बैठक की झलकियां (दिनांक: 30.08.2025).
33. रेल - भारत की जीवन रेखा - लेख
34. कॉर्पोरेट कैनवास पर नारी की नई पहचान: परिधान से प्रोफेशनलिज़्म तक - लेख
35. राष्ट्रकवि रामधारी सिंह "दिनकर" - जयंती
36. वरदान - कहानी
37. ठक ठक तो होती ही रहेगी - लघु कथाp
38. Time is Eternity / समय है शाश्वतता - लेख
39. हिंदी दिवस समारोह – 2025 एवं पांचवां अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन (दिनांक: 14-15 सितंबर, 2025)
40. आईआरएफसी कार्यालय में हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित हिंदी निबंध प्रतियोगिता की झलकियां (दिनांक: 17.09.2025)
41. आईआरएफसी कार्यालय में हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित हिंदी सुलेख प्रतियोगिता की झलकियां (दिनांक: 18.09.2025)
42. आईआरएफसी कार्यालय में हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता की झलकियां (दिनांक: 19.09.2025)
43. आईआरएफसी द्वारा हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक तथा हिंदी कार्यशाला की झलकियां (दिनांक: 22.09.2025)
44. आईआरएफसी कार्यालय में हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित हिंदी चित्र वर्णन प्रतियोगिता की झलकियां (दिनांक: 24.09.2025)
45. आईआरएफसी कार्यालय में हिंदी पखवाड़े के समापन और पुरस्कार वितरण की झलकियां (दिनांक: 26.09.2025)
46. सीएसआर से संबंधित विविध गतिविधियां (अप्रैल – सितंबर 2025 छमाही)
47. अनमोल वचन

मुख्य संरक्षक
श्री मनोज कुमार दूबे
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

प्रधान संपादक
मनीष चंद्र
कार्यपालक निदेशक
(मा. सं. एवं प्रशा.)

संपादक
श्वेत केतु मिश्रा
मुख्य महाप्रबंधक (टेक)

उप संपादक
अजय कक्कड़
सहायक प्रबंधक (मा. सं. एवं प्रशा.)

सह संपादक
पुष्पिंदर कौर
हिन्दी परामर्शदाता

सहायक
रोहन श्रीवास्तव
हिन्दी अनुवादक

हिन्दी दिवस पर माननीय रेल मंत्री जी का संदेश

अश्विनी वैष्णव
Ashwini Vaishnaw

रेल, सूचना और प्रसारण एवं इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री
भारत सरकार
Minister of Railways, Information & Broadcasting and Electronics & Information Technology
Government of India



संदेश

हर वर्ष 14 सितम्बर को मनाया जाने वाला *हिन्दी दिवस* हमें हिन्दी के गौरवशाली इतिहास, सांस्कृतिक विरासत और इसके वैश्विक महत्व की याद दिलाता है। यह दिन हमें हिन्दी के प्रचार-प्रसार और उसकी समृद्धि के लिए संकल्पित होकर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

हिन्दी हमारी संस्कृति, परंपरा और एकता की अमूल्य धरोहर है। यह केवल संचार का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी पहचान और गर्व का प्रतीक है। अपनी सरलता और समृद्धि के कारण हिन्दी ने राष्ट्रीय ही नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी एक विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है।

आइए, इस अवसर पर हम संकल्प लें कि अपने कार्य, व्यवहार और जीवन के हर क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाएँगे। हिन्दी का सम्मान और संवर्धन करना केवल भाषा के प्रति हमारा कर्तव्य नहीं है, बल्कि यह राष्ट्र की प्रगति और सांस्कृतिक गौरव का भी आधार है।

आप सभी को *हिन्दी दिवस 2025* की हार्दिक शुभकामनाएँ।

अश्विनी वै

अश्विनी वैष्णव

Room No : 341, Rail Bhawan, Raisina Road, New Delhi-110001
Tel. : +91-11-23386645, 23381213 Fax : +91-11-23387333

"उड़ान" ई-पत्रिका के सातवें अंक के संबंध में सदस्य वित्त, रेलवे बोर्ड से प्राप्त प्रशंसा-पत्र

उषा वेणुगोपाल
सदस्य वित्त

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
रेल मंत्रालय
रेलवे बोर्ड, रेल भवन,
रायसीना रोड, नई दिल्ली–110001
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF RAILWAYS
RAILWAY BOARD, RAIL BHAWAN,
RAISINA ROAD, NEW DELHI-110001

आईआरएफसी की हिंदी की छमाही ई– पत्रिका "उड़ान" का सातवां अंक प्राप्त हुआ जिसे देखकर मन अत्यंत प्रसन्न हो गया।

मैं आईआरएफसी के सीएमड़ी श्री मनोज कुमार दूबे जी को इस सुंदर व ज्ञानवर्धक पत्रिका के प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई देती हूं। संपादक मंडल ने इस पत्रिका को बनाने में कड़ी मेहनत की है। पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों की तहे दिल से प्रशंसा करती हूं तथा इस पत्रिका के स्वर्णिम उज्जवल भविष्य की कामना करती हूं

(उषा वेणुगोपाल)

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से



"उड़ान" ई-पत्रिका का आठवां अंक अपने सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है।

राजभाषा संबंधी सांविधिक उपबंधों का अनुपालन सुनिश्चित करने तथा सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग-प्रसार को बढ़ाने के लिए आईआरएफसी सदैव कृतसंकल्प रही है।

"उड़ान" पत्रिका के माध्यम से हमारे कर्मियों की हिंदी की रचनात्मक प्रतिभा में निरतंर निखार आ रहा है।

कर्मी अपने विचारों को हिंदी में लिखने के लिए प्रोत्साहित हो रहे हैं। पत्रिका के गत अंकों की भांति इस अंक में भी कंपनी की व्यावसायिक, सांस्कृतिक तथा राजभाषा विषयक गतिविधियों से अवगत कराते हुए विभिन्न विषयों पर ज्ञानवर्धक एवं रोचक सामग्री उपलब्ध करवाई गई है।

आईआरएफसी व्यावसायिक उपलब्धियों में भी नए आयाम स्थापित कर रही है। भारत सरकार द्वारा आईआरएफसी को नवरत्न का दर्जा प्रदान करना हमारे संगठन की अभूतपूर्व उपलब्धि है। साथ ही साथ हिंदी के क्षेत्र में "उड़ान" पत्रिका के सातवें अंक को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), दिल्ली उपक्रम-2 की छमाही बैठक में "सम्मान शील्ड" से सम्मानित किया जाना भी हमारे कर्मियों की हिंदी के क्षेत्र में किए गए अथक प्रयासों का सुंदर परिणाम है।

मैं इन उपलब्धियों के लिए अपने कर्मियों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

मनोज दूबे

(मनोज कुमार दूबे)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

निदेशक (वित्त) का संबोधन



आपके समक्ष आईआरएफसी की हिंदी की "उड़ान" ई-पत्रिका का आठवां अंक प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता तथा गर्व की अनुभूति हो रही है। आईआरएफसी व्यावसायिक स्तर पर शानदार प्रदर्शन कर रही है। साथ ही हिंदी के प्रयोग प्रसार के प्रति भी पूरी निष्ठा से कार्य कर रही है।

जैसा कि आप जानते ही हैं कि हिंदी भाषा ने वैश्विक स्तर पर भी अपनी प्रभावपूर्ण उपस्थिति दर्ज करवा दी है। भाषा के स्तर पर हिंदी विश्व की तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा बन गई है। सोशल मीडिया और सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी हिंदी नए आयाम स्थापित कर रही है।

"उड़ान" ई-पत्रिका के माध्यम से आईआरएफसी के कार्मिकों को उनकी हिंदी के प्रति सृजनात्मक साहित्यिक प्रतिभा तथा अभिरुचि को व्यक्त करने का प्लेटफार्म मिला है। प्रेरणा और प्रोत्साहन से हिंदी का प्रयोग प्रसार हमारा ध्येय रहा है। इस अंक में आईआरएफसी की व्यावसायिक तथा राजभाषा विषयक गतिविधियों, उपलब्धियों तथा हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं का बहुत ही सुंदर तरीके से चित्रण किया गया है।

मैं इस "उड़ान" ई-पत्रिका की अभूतपूर्व सफलता की मंगलकामना करता हूं तथा आप सबको हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

रणधीर

(रणधीर सहाय)
निदेशक (वित्त)

संदेश



आईआरएफसी की छमाही ई-पत्रिका "उड़ान" का आठवां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। इसमें आईआरएफसी की व्यावसायिक, सांस्कृतिक और हिंदी विषयक गतिविधियों तथा उपलब्धियों का सचित्र वर्णन किया गया है।

राजभाषा नीति के अनुसार सरकारी कामकाज में अधिकाधिक हिंदी का प्रयोग-प्रसार करना तथा हिंदी विषयक संवैधानिक नियमों का शत प्रतिशत अनुपालन करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। जिसका आईआरएफसी बखूबी निर्वहन कर रही है।

आईआरएफसी में 14 सितंबर 2025 से 28 सितंबर, 2025 तक हिंदी पखवाड़े का सफल आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे हिंदी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी सुलेख प्रतियोगिता, हिंदी स्लोगन प्रतियोगिता, हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता तथा हिंदी चित्र-वर्णन प्रतियोगिता आदि आयोजित की गई तथा प्रतिभागियों को पुरस्कृत भी किया गया।

मुझे यह बताते हुए गर्व की अनुभूति हो रही है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), दिल्ली उपक्रम-2 की 20 अगस्त 2025 को संपन्न छमाही बैठक में "उड़ान" पत्रिका को **सम्मान शील्ड** से सम्मानित किया गया है। हिंदी के क्षेत्र में भी आईआरएफसी निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

आशा है यह अंक भी आपको अवश्य पसंद आएगा। पत्रिका के संबंध में आपके सुझावों का स्वागत है।

(मनीष चंद्र)
कार्यपालक निदेशक (मा. सं. एवं प्रशा.)

पाठकों के पत्र

उड़ान (सातवां अंक)

"उड़ान" जैसा कि नाम ही बताता है यह पत्रिका हर पढ़ने वाले और लिखने वाले को उड़ने के लिए कल्पनाओं का आसमान देती है। यह पत्रिका हिंदी भाषा का प्रयोग करने पर जोर डालती है जो कि हमारी राष्ट्रभाषा के प्रति हमारे प्रेम को दर्शाता है।

आईआरएफसी के अधिकारियों तथा कर्मचारियों की हिंदी के प्रति रुचि की झलकियां इस पत्रिका को पढ़ते ही दिख जाती हैं। यह पत्रिका स्वरचित रचनाओं को प्रस्तुत करने का मंच प्रदान करती है। "अस्तित्व" जैसी कविता हो या "महाकुंभ" का वर्णन, "खेल उत्सव" की बात करो या “पिंक टॉयलेट परियोजना” पर चर्चा हर उपलब्धि को एक साथ जोडकर इस पत्रिका के द्वारा प्रस्तुत करना गौरव की बात है।

इस नवरत्न आईआरएफसी को मेरी ढेरों बधाई। "उड़ान" को मेरी ओर से शुभकामनाएं। आने वाले समय में यह पत्रिका और चमके और ऊंचाई को छुए। अच्छा लगता है जब जीवन की आपाधापी में से कुछ समय हम अपने शौक के लिए निकाल पाते हैं। यह पल हमारे जीवन में Reboot करने का काम करते हैं।

"उड़ान"से जुड़े हर व्यक्ति को मेरी ओर से मंगल कामना।

वंदना दूबे
पत्नी श्री मनोज कुमार दूबे
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

पाठकों के पत्र

19/पत्रि./2025- उ0क्षे0का0का0-1(दि)/
भारत सरकार/GOVT. OF INDIA
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
MINISTRY OF HOME AFFAIRS, (DEPTT. OF O.L.)
उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय-1 (दिल्ली)
NORTHERN REGIONAL IMPLEMENTATION OFFICE-1 (DELHI)
तृतीय तल, त्रिकूट-II, भीकाजी कामा प्लेस, आर.के.पुरम्, नई दिल्ली-110066
3RD FLOOR, TRIKOOT-II, BHIKAJI CAMA PLACE, R.K. PURAM, NEW DELHI-110066
दूरभाष/Telephone 011-20867260, 20867261ईमेल/Email - ddriodel-dol@nic.in

दिनांक : 11 दिसंबर, 2025

संदेश

आईआरएफसी की छमाही पत्रिका **"उडान"** का **सातवां अंक प्राप्त हुआ**। इस अंक में कंपनी की व्यावसायिक, सास्कृतिक तथा हिंदी विषयक गतिविधियों का बहुत सुंदर तरीके से चित्रण किया गया है। साथ ही कंपनी के कार्मिकों द्वारा लिखित मौलिक रचनाओं, अन्य ज्ञानवर्धक तथा उपयोगी जानकारी को भी समाविष्ट किया गया है।

मैं कंपनी को नवरत्न का दर्जा मिलने की बधाई देता हूं तथा **"उड़ान"** पत्रिका के नियमित प्रकाशन के लिए आईआरएफसी को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

कुमार पाल शर्मा
संयुक्त निदेशक (कार्यान्वयन)

आईआरएफसी की व्यावसायिक उपलब्धियां

वित्तीय प्रदर्शन: सितंबर, 2025 को समाप्त तिमाही तक आईआरएफसी की कुल आय क्रमशः ₹6,371.91 करोड़ और ₹13,290.15 करोड़ रही, जो प्रभावी देयता प्रबंधन और स्थिर परिसंपत्ति गुणवत्ता द्वारा समर्थित है।

कंपनी ने कर-पश्चात लाभ (पीएटी) 3,522.67 करोड़ रुपये दर्ज किया, जबकि पिछले वर्ष यह 3,189.47 करोड़ रुपये था, जो 10.45% की मजबूत दोहरे अंकों की वृद्धि दर्शाता है।

कंपनी ने वित्त वर्ष 2025-26 में 10.19% की वृद्धि के साथ 1,776.98 करोड़ रुपये का लाभ दर्ज किया, जबकि वित्त वर्ष 2024-25 में यह 1,612.65 करोड़ रुपये था।

यह मजबूत प्रदर्शन कंपनी के रणनीतिक विविधीकरण की सफलता को रेखांकित करता है, जिसमें नए व्यावसायिक क्षेत्रों ने बेहतर मार्जिन और लाभप्रदता में योगदान दिया है।

भारतीय रेलवे से नया व्यवसाय न मिलने और पिछले वर्षों में कोई मौजूदा पाइपलाइन न होने के बावजूद, निगम प्रबंधनाधीन परिसंपत्तियों (एयूएम) में वृद्धि का रुख दिखा रहा है, जो 4.62 लाख करोड़ रुपये है। यह उपलब्धि पहली छमाही के दौरान पूरी तरह से सक्रिय व्यावसायिक विकास पहलों से प्रेरित है।

निगम ने क्रमशः 56,193.85 करोड़ रुपये और 5.39 रुपये प्रति शेयर (वार्षिक) का अब तक का सर्वोच्च नेट वर्थ और ईपीएस भी प्रदर्शित किया।

व्यावसायिक विविधीकरण और विकास: आईआरएफसी ने रेलवे से जुड़े क्षेत्रों जैसे नवीकरणीय ऊर्जा सहित बिजली उत्पादन, ऊर्जा संचरण, कोयला खनन, औद्योगिक अवसंरचना आदि में छमाही के दौरान कुल 45,382 करोड़ रुपये के नए व्यावसायिक समझौतों को मंजूरी दी और निष्पादित किया। ये स्वीकृतियाँ पिछले वित्तीय वर्ष में निष्पादित 5,250 करोड़ रुपये की तुलना में नौ गुना वृद्धि दर्शाती हैं।

प्रतिस्पर्धी किन्तु मूल्य-वर्धक प्रसार पर संपन्न हुए नए लेन-देन से शुद्ध ब्याज मार्जिन (एनआईएम) में उल्लेखनीय सुधार हुआ है, जो अब 1.55% (वार्षिकीकृत) है। यह रुझान दोहरे अंकों की कर-पश्चात वृद्धि में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है और आने वाली तिमाहियों में विविधीकृत पोर्टफोलियो के परिपक्व होने के साथ इसके और मजबूत होने की उम्मीद है।

भविष्य का दृष्टिकोण: रणनीतिक विविधीकरण की गति बढ़ने के साथ, आईआरएफसी वित्त वर्ष 2025-26 में अपने परिसंपत्ति आधार का विस्तार करने के लिए अच्छी स्थिति में है। नई जोड़ी गई व्यावसायिक लाइनों से दीर्घकालिक विकास को गति मिलने, शुद्ध ब्याज मार्जिन (एनआईएम) में ऊपर की ओर बढ़ने की गति को बनाए रखने और देश में एक अग्रणी और रणनीतिक बुनियादी ढांचा वित्तपोषक के रूप में आईआरएफसी की स्थिति को और मजबूत करने की उम्मीद है।

आईआरएफसी द्वारा हिंदी के प्रयोग-प्रसार के लिए किए गए विशेष प्रयास एवं उपलब्धियां

1. आईआरएफसी कार्यालय में गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार प्रत्येक तिमाही में हिंदी कार्यशाला और राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का नियमित रूप से आयोजन किया जाता है। जून 2025 तिमाही में आयोजित हिंदी कार्यशाला में केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो से संयुक्त निदेशक, श्री नरेश कुमार जी को आमंत्रित किया गया था। इस कार्यशाला में उन्होंने हिंदी से संबंधित नियमों की जानकारी दी और सबको हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित किया। यह कार्यशाला बेहद सफल रही।
2. राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में हिंदी के प्रयोग-प्रसार पर विस्तृत रूप से चर्चा की जाती है। जिसमें अध्यक्ष महोदय द्वारा सभी उच्च अधिकारियों को राजभाषा नियमों का अनुपालन करने के निर्देश दिए गए।
3. जून 2025 तिमाही में गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित "राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह" में आईआरएफसी के अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), दिल्ली (उपक्रम-2) के विभिन्न कार्यालयों द्वारा आयोजित कार्यक्रम/प्रतियोगिताओं में भी आईआरएफसी से अधिकारी/कर्मचारी सदैव भाग लेते हैं और प्रतियोगिताओं में भी हिस्सा लेते हैं।
4. आईआरएफसी कार्यालय में 12 अगस्त, 2025 को स्वच्छता और वृक्षारोपण कार्यक्रम तथा नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया।
5. आईआरएफसी कार्यालय में 15 अगस्त, 2025 को स्वतंत्रता दिवस अत्यंत धूमधाम से आयोजित किया गया। कार्यालय परिसर में राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। सभी प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर आईआरएफसी की छमाही गृह ई-पत्रिका "उड़ान" के सातवें अंक का विमोचन भी किया गया। इस संबंध में यह उल्लेखनीय है कि आईआरएफसी की ई-पत्रिका "उड़ान" को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 20 अगस्त, 2025 को संपन्न 15वीं छमाही बैठक में "सम्मान शील्ड पुरस्कार" से सम्मानित किया गया है। निश्चय ही यह आईआरएफसी के लिए बेहद गौरवपूर्ण उपलब्धि है।
6. आईआरएफसी कार्यालय में 14 सितम्बर, 2025 में 28 सितम्बर, 2025 तक हिन्दी पखवाड़ा का अत्यंत भव्य तरीके से आयोजन किया गया। आईआरएफसी की रा.भा.का.स. की 110वीं तिमाही बैठक तथा हिन्दी कार्यशाला का सम्मिलित आयोजन Scope Social Interaction Centre के Orchid Multipurpose Hall के कॉन्फ्रेंस हॉल में बहुत शानदार तरीके से किया गया जिसमें रेल मंत्रालय के पूर्व संयुक्त सचिव, श्री प्रेमपाल शर्मा जी को विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। हिन्दी पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे हिन्दी निबंध प्रतियोगिता, हिन्दी सुलेख प्रतियोगिता, हिन्दी स्लोगन प्रतियोगिता, हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिता तथा हिन्दी चित्र-वर्णन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रत्येक प्रतियोगिता के चयनित प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा सांत्वना नकद पुरस्कार से पुरस्कृत भी किया गया। इन प्रतियोगिताओं में आईआरएफसी के कर्मियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया।
7. नराकास के विभिन्न कार्यालयों द्वारा समय-समय पर आयोजित विभिन्न कार्यक्रम/प्रतियोगिताओं में आईआरएफसी कर्मी नियमित रुप से भाग लेते हैं।

8. ई-ऑफिस में सभी नाम/पदनाम हिन्दी में किए गए हैं।

9. आईआरएफसी के सभी कर्मियों को प्रतिदिन एक अंग्रेजी से हिन्दी शब्द ई-मेल किया जाता है ताकि उन्हें हिंदी में काम करने में सुविधा हो।

10. आईआरएफसी में गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों का भी शत-प्रतिशत अनुपालन किया जाता है।

11. आईआरएफसी कार्यालय में सभी मानक नेमी पत्रों/फॉर्मों के द्विभाषी टेम्प्लेट भी उपलब्ध करवाए गए हैं।

साहित्य का कर्तव्य केवल ज्ञान देना नहीं है, परंतु एक नया वातावरण देना भी है।

- डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

समूचे राष्ट्र को एकताबद्ध और दृढ़ करने के लिए हिन्दी भाषी जाति की एकता आवश्यक है।

- रामविलास शर्मा

हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल है, इसमें कोई संदेह नहीं।

- अनंत गोपाल शेवड़े

कविता

अपना घर

घर सिर्फ दीवारों और छतों का जमघट नहीं
घर उसमें रहने वालों का ठिकाना भी है
घर की छतें घर का अखबार होती हैं
कोई पूछे तो सब बताने को तैयार होती हैं

दीवारें बाटंती हैं घर को कई हिस्सों में
मगर इनमें भी तो कुछ बात होती है
जब प्यार भरा हो रिश्तों में तो
यही दीवारें सबको एक साथ करती हैं
संजो कर रखती हैं रिश्ते तस्वीरों के रूप में
मेडल हो या ट्रॉफी दीवारें सबको साथ रखती हैं

वह जो लड़ने से पहले ही हार मान लेते हैं उनको बताओ
दुआएं, कोशिशें, कामयाबी में नींव का काम करती हैं
छलांग मार कर ही निकलेगा डूबने का डर,
खुद अपने पांव को बेडियों में ना जकड़

तिनका तिनका जोड़ जब बनाते हैं हम अपना घर
तब वही घर बन जाता है सुकून, राहत से भरा घर
जहां आते ही आसान हो जाती हैं सारी मुश्किलें
हां, शायद इसलिए हम बनाते हैं "अपना घर"

वंदना दूबे
पत्नी श्री मनोज कुमार दूबे
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

कविता

Thanks to Reels.....

जी हां.....

Topic sahi पढ़ा आपने,

Reels ko धन्यवाद 🙏

आज की इस नेटवर्किंग मोबाइल की दुनिया में

इन reels ने बहुतों को अपना कंधा दे रखा है।

थोड़ा ध्यान दीजिए, और सोचिए

क्यों है न सही?

ये reels देखते ही देखते न जाने कितने दिलों की, कितने लोगों की जुबां बन गई है।

फिर चाहे वो किसी भी रिश्ते में हो।

पति - पत्नी

मां- बाप

भाई- बहन

गुरु - शिष्य

सास - बहू

दोस्त

मां- बेटी

और भी न जाने कितने कहे अनकहे रिश्ते।

समय धीरे चल नहीं सकता

और

रिश्तों के पास समय नहीं।

तो इन सब को कम समय में सही जगह भेजने का काम कर रही हैं ये reels.....

और अगर तब भी आपके पास इन reels को देखने का या देख कर समझने का समय ही ना हो.....

तो फिर आप बन चुके हैं रीलहीन मतलब संवेदनहीन।

तो आईए कहते हैं हम thanks to Reels.....

खुद को खुद से ✍️

वंदना दूबे
पत्नी श्री मनोज कुमार दूबे
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

लेख

नई पीढ़ी की चुनौतियां

आज की नई पीढ़ी अपार संभावनाओं और अवसरों से भरी हुई है। विज्ञान और तकनीक के युग में युवाओं को वैश्विक मंच दिया है। लेकिन इसके साथ ही कई गंभीर चुनौतियां भी सामने आई हैं। इन चुनौतियों को समझना और उनका समाधान होना अत्यंत आवश्यक है। सबसे बड़ी चुनौती है प्रतिस्पर्धा और करियर का दबाव। अच्छे अंकों, बेहतर नौकरी और स्थिर भविष्य की चाह में युवा अक्सर मानसिक तनाव का शिकार हो जाते हैं।

दूसरी चुनौती है प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया का प्रभाव। एक और जहां यह जानकारी और अवसर देती है वहीं दूसरी और यह ध्यान भटकाने, नकारात्मक तुलना और समय की बर्बादी का कारण भी बन जाती है।

तीसरी चुनौती है नैतिक मूल्य और धैर्य की कमी।

आधुनिक जीवनशैली में तेजी से सफलता पाने की चाह ने युवाओं को परिश्रम और संयम से दूर किया है। इसके अलावा नशे की लत, पर्यावरणीय संकट और बेरोजगारी भी उनके सामने गंभीर समस्या के रूप में खड़ी है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए युवाओं को सकारात्मक सोच और आत्मानुशासन अपनाना होगा। करियर के दबाव को संतुलित करने के लिए सही समय प्रबंधन और आत्मविश्वास आवश्यक है। सोशल मीडिया का उपयोग सीमित और सार्थक उद्देश्य के लिए करना चाहिए। साथ ही अपने मूल्यों और परंपराओं को बनाए रखना युवाओं को मजबूत पहचान देता है। युवाओं को चाहिए कि शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान दें। नियमित व्यायाम और ध्यान करें और नकारात्मक आदतों से दूरी बनाएं। समाज और परिवार के साथ जुड़े रहकर भी वे सहयोग और मार्गदर्शन कर सकते हैं। इस प्रकार यदि नई पीढ़ी चुनौतियों को अवसर मानकर आगे बढ़े, दृढ़ निश्चय के साथ काम करे तो न केवल उनका भविष्य उज्जवल होगा बल्कि राष्ट्र भी सशक्त और समृद्ध बनेगा।

राखी गोयल
पत्नी श्री सुनील कुमार गोयल
कार्यपालक निदेशक (वित्त)

लेख

सार्वजनिक खरीद में कृत्रिम बुद्धिमत्ता: अधिकारियों को सशक्त बनाते हुए, पारदर्शिता को बढ़ावा

भारत की खरबों रुपये की सार्वजनिक खरीद प्रणाली में—जहाँ पारदर्शिता, धन का सर्वोत्तम उपयोग और गति सर्वोपरि हैं—निविदाएँ इसका हृदय हैं। परिदृश्य व्यापक है: केंद्र, राज्य और सार्वजनिक उपक्रमों की खरीद देश के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) का लगभग 20–22% है। रक्षा से लेकर स्वास्थ्य सेवा, ग्रामीण विद्युतीकरण से लेकर उच्च गति रेल तक—खरीद प्रक्रिया देश की विकास गाथा लिखती है।

मूल्यांकन की चुनौती

इस विशाल तंत्र के पीछे एक कम चर्चित पहलू है—मूल्यांकन का कठिन दायित्व। अधिकारियों को पात्रता जाँचने, प्रमाणपत्र सत्यापित करने और बोलियों की तुलना करने के लिए हज़ारों पन्नों से जूझना पड़ता है—वह भी कड़ी समय-सीमा के भीतर। यद्यपि GeM जैसे प्लेटफ़ॉर्म ने फ्रंट-एंड को डिजिटल बनाया है, परंतु बैक-एंड अब भी विस्तृत दस्तावेज़ों पर निर्भर है।

वित्त वर्ष 2023–24 में अकेले GeM पर ₹3 लाख करोड़ से अधिक के सामान और सेवाओं की खरीद हुई। प्रत्येक निविदा पर औसतन 5 से 25 बोलियाँ आती हैं, और प्रायः 1000 से अधिक पृष्ठों का बोली-दस्तावेज़ अपलोड होता है। इस विशाल डेटा का मैनुअल विश्लेषण न केवल समयसाध्य है, बल्कि त्रुटि की संभावना भी बढ़ा देता है।

निविदा मूल्यांकन में AI की भूमिका

यहीं पर जनरेटिव AI समाधान प्रस्तुत करता है। OCR (ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकग्निशन) और सेमान्टिक पार्सिंग जैसी तकनीकों से AI इंजन दस्तावेज़ पढ़कर, जानकारी निकालकर और उसकी तुलना कर सकते हैं। जो काम मानव को दिनों में करना पड़ता है, वह AI घंटों में कर सकता है—और अधिक पारदर्शिता के साथ।

कल्पना कीजिए—एक AI एजेंट सीधे GeM या IREPS से बोलियाँ ग्रहण करता है, पात्रता शर्तों (जैसे टर्नओवर, प्रमाणन) की जाँच करता है और एक अनुपालन मैट्रिक्स तैयार कर देता है। अधिकारियों को केवल अपवादों पर ध्यान देना पड़ता है, न कि हर सामान्य जाँच पर।

स्मार्ट मूल्यांकन के क्रियान्वयन योग्य कदम

- ✓ **मशीन-पठनीय बोली परिशिष्ट (MRBA):** PDF के साथ-साथ बोलीदाता एक JSON/XML शीट भी जमा करें, जिसमें पात्रता संबंधी मुख्य डेटा (जैसे टर्नओवर, नेटवर्थ, प्रमाणपत्र आदि) संरचित रूप में हो।
- ✓ **विश्वसनीय डेटा जाँच:** MCA-21, GSTN, EPFO, BIS, UDYAM जैसे सरकारी डेटाबेस से सीधे (रीड-ओनली) लिंक कर, डेटा की तुरंत पुष्टि की जा सकती है।
- ✓ **क्लॉज़-टू-एविडेंस मैपिंग (CEM):** निविदा की शर्तों और प्रस्तुत दस्तावेज़ों को मैप कर AI यह दर्शा सकता है कि किस पृष्ठ पर आवश्यक शर्त पूरी हुई है।

- ✓ **जोखिम एवं अपवाद रजिस्टर (RER):** गुम पन्ने, समाप्त प्रमाणपत्र, गणना त्रुटि आदि को अलग से चिह्नित कर, अंतिम निर्णय समिति पर छोड़ा जाता है।
- ✓ **AI आधारित दर-यथार्थता:** AI पिछली स्वीकृत दरों (Last Accepted Rate – LAR) को विभिन्न डेटाबेस से खंगालकर भौगोलिक, मुद्रास्फीति व कार्य-क्षेत्र के आधार पर तुलनात्मक मानक प्रस्तुत कर सकता है।

मानवीय निगरानी, AI की सहायता

यह आशंका निराधार है कि AI मानव निर्णय का स्थान ले लेगा। यह केवल दिनचर्या के कार्यों का बोझ घटाएगा। जवाबदेही और अंतिम निर्णय सदैव समिति के पास रहेगा।

मूल्यांकन से आगे

AI न केवल मूल्यांकन में, बल्कि पूर्व-निविदा चरण में भी मदद कर सकता है—जैसे RFP का मसौदा तैयार करना, विरोधाभासी धाराएँ हटाना और मानकीकृत प्रारूप बनाना।

आगे की राह

वित्त वर्ष 2025 के लिए भारत का पूंजीगत व्यय बजट ₹11.11 लाख करोड़ है। 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए, बुद्धिमान प्रणालियाँ अनिवार्य होंगी। GeM, CPP और IREPS जैसे प्लेटफ़ॉर्म को AI मॉड्यूल से जोड़कर पायलट प्रोजेक्ट्स के माध्यम से शुरुआत की जा सकती है।

भारत की सार्वजनिक खरीद अब डिजिटल फ़ाइल अपलोड से डिजिटल इंटेलिजेंस की ओर कदम बढ़ा रही है। यह परिवर्तन कागज़ों के ढेर से ज्ञान के स्तंभ की ओर होगा। AI अधिकारियों की जगह नहीं लेगा, बल्कि उन्हें सशक्त बनाएगा—उनका कार्यभार घटाएगा, निर्णय प्रक्रिया तेज़ करेगा और पारदर्शिता सुनिश्चित करेगा।

नव गोयल
महाप्रबंधक (वित्त)

हिंदी वह भाषा है, जो भारत की विविधता को एकता में पिरोती है।

- माखनलाल चतुर्वेदी

लेख

श्री वेंकटेश्वर स्वामी

श्री वेंकटेश्वर स्वामी जो भगवान विष्णु महाविष्णु के अवतार हैं। माना जाता है कि भगवान श्री विष्णु कलयुग में अपने भक्तों की रक्षा करने हेतु धरती पर श्री वेंकटेश्वर स्वामी के रूप में अवतरित हुए।

श्री वेंकटेश्वर स्वामी का मंदिर दक्षिण भारत के आंध्र प्रदेश में स्थित तिरुमला की पहाड़ियों पर स्थित है। यह मंदिर तिरुमला के साथ पहाड़ियों पर एक पहाड़ी पर स्थित है। मंदिर में स्थित श्री वेंकटेश्वर स्वामी की प्रतिमा एक स्वयंभू प्रतिमा मानी जाती है। इन्हें कई नाम से पुकारा जाता है श्रीनिवासा, श्री बालाजी, गोविंदा, श्री हरि आदि। श्री बालाजी मंदिर को कलयुग बैकुंठ भी कहा जाता है। तिरुमला की भूमि पर कदम रखते ही वहां के वातावरण में श्री महा विष्णु के होने की अनुभूति होती है।



भक्तों का अटूट विश्वास है कि श्री वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन करने मात्र से ही उनकी सभी मनोकामनाएं पूरी हो जाती हैं। इसी विश्वास और श्रद्धा से हर साल देश-विदेश से लाखों श्रद्धालु भगवान के दर्शन करने हेतु तिरुमला आते हैं। मान्यता है कि अपनी मनोकामना पूरी होने पर भक्त तिरुमला में अपने केश दान करने आते हैं। इसके अलावा भक्त मंदिर में सोना, चांदी, हार और बहुमूल्य वस्तु भी भेंट चढ़ाते हैं।

श्री बालाजी भगवान के मंदिर में सालाना करोड़ो रूपये की भेंट चढ़ाई जाती है। इस मंदिर को दुनिया के धनी मंदिरों में से एक कहा जाता है। बैकुंठ एकादशी पर मंदिर का प्रबंधन तिरुमला तिरूपति देवस्थानम (टीटीडी) नामक सरकारी संस्था द्वारा किया जाता है।

श्री वेंकटेश्वर स्वामी के मंदिर में विशेष दिनों में विशेष पूजा, सेवा, उत्सव का आयोजन किया जाता है।



विशेष पूजा कल्याणम की जाती है। इसके अलावा तिरुमला के मंदिर का मुख्य उत्सव ब्रह्मोत्सव है। यह वार्षिकोत्सव 9 दिनों का होता है। इस उत्सव में विभिन्न प्रकार के धार्मिक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इस उत्सव में श्री बालाजी भगवान को विभिन्न प्रकार के वाहनों जैसे कि हंस वाहन, गज वाहन, गरूडा वाहन, शेष वाहन आदि वाहनों पर तिरुमला की गलियों में शोभा यात्रा निकाली जाती है। इन 9 दिनों में ब्रह्मोत्सव में शामिल होकर श्री बालाजी भगवान के दर्शन हेतु अनेक श्रद्धालु दुनिया भर से तिरुमला में एकत्रित होते हैं।

कुल मिलाकर यह ब्रह्मोत्सव संस्कृति और परंपरा को दर्शाता है।

लंबी कतार में घंटों खड़े होकर काफी प्रतीक्षा के बाद श्री वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन होते हैं और भक्त भगवान की प्रतिमा का दर्शन कर अपनी सारी थकान भूल जाते हैं। तिरुपति श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर का इतिहास सदियों पुरानी पौराणिक कथाओं से जुड़ा है। तिरुमला मंदिर वह स्थान है जहां आस्था, श्रद्धा, विश्वास, कला, संस्कृति, इतिहास का संगम है।

सनापला पद्मजा
पत्नी श्री सनापला रमेश
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के प्रधान स्टाफ अधिकारी

यात्रा वृत्तांत

सोन की तलाश में — अमरकंटक की ओर मेरा सफ़र

मैं डेहरी ऑन सोन का रहने वाला हूँ।

बचपन से सोन नदी की चौड़ी, शांत और स्वर्णिम धाराएँ मुझे किसी वीर पुरुष की छाती-सी लगती थीं - विस्तृत, स्थिर और गर्व से भरी।
शाम ढलते ही जब सूर्य की अंतिम किरणें उसकी लहरों पर बिखरतीं, तो लगता मानो नदी स्वयं सोने से बनी हो।

बचपन में सुना था -

“गंगा कहाँ से आये रे, गंगा कहाँ तू जाये रे...”
गंगा का उद्गम तो सबको पता था - गंगोत्री।
पर मेरे मन में हमेशा यह प्रश्न गूंजता रहा -
“सोन कहाँ से आये रे?”

जब किसी यात्रा-वृत्तांत में पढ़ा कि अमरकंटक ही सोन का उद्गम स्थल है, तो लगा जैसे बचपन की अधूरी जिज्ञासा को दिशा मिल गई।
बस, सोन की खोज में निकल पड़ा - अपनी ही नदी के जन्मस्थान को देखने।

अमरकंटक - नदियों की जननी भूमि

घने साल के जंगलों, हरे-भरे पर्वतों और साफ़ हवा से भरा अमरकंटक वास्तव में नदियों की जननी है। यहाँ से तीन नदियाँ तीन दिशाओं में बह निकलती हैं -
नर्मदा पश्चिम की ओर, सोन पूर्व की ओर, और जोहिला दक्षिण की ओर।

पहला पड़ाव था **नर्मदा कुंड**। संगमरमर की चट्टानों के बीच से फूटता नर्मदा का निर्मल जल - जैसे किसी तपस्विनी की आँखों से टपकती करुणा। वहीं पास ही स्थित है सोन कुंड, जहाँ पत्थरों के बीच से चाँदी-सी चमकती धारा चुपचाप जन्म लेती है। यह दृश्य किसी पुराण से निकली चित्रकला जैसा था।

प्रेम, धोखा और प्रवाह की कथा

कहते हैं कि राजा मेखल की पुत्री राजकुमारी नर्मदा सौंदर्य और तेज की प्रतिमूर्ति थी। राजकुमार सोनभद्र ने उनके लिए दुर्लभ गुलबकावली का पुष्प लाकर उनका वरण किया।
विवाह की तिथि निश्चित हुई, और अमरकंटक में मंडप सजा -
घंटों, दीपों और पुष्पों से सारा पर्वत सज उठा।
नर्मदा ने अपनी दासी जोहिला के हाथों सोनभद्र को प्रेम-संदेश भेजा,
किन्तु नियति को कुछ और ही मंज़ूर था।
जोहिला, जो स्वयं भी सोनभद्र के प्रति आकर्षित थी,
नर्मदा के वस्त्राभूषण पहनकर उनसे मिलने चली गई।
सोनभद्र ने उसे नर्मदा समझ लिया -
और प्रेमालाप का वह क्षण दोनों के जीवन को बदल गया।

जब नर्मदा स्वयं वहाँ पहुँचीं और यह दृश्य देखा,
तो उनके हृदय का सारा विश्वास टूट गया।
अपमान और आक्रोश से जल उठीं, और वहीं से उन्होंने मानव रूप त्यागकर
पश्चिम दिशा की ओर उल्टी बहना शुरू कर दिया।
जहाँ बाकी नदियाँ पूरब को बहती हैं,
नर्मदा का प्रवाह **विद्रोह और स्वाभिमान** का प्रतीक बन गया।

जब सोनभद्र को अपनी भूल का बोध हुआ,
तो वे पछतावे में पूर्व दिशा की ओर बह निकले -
मानो पश्चाताप में अपने ही पथ से भाग रहे हों।
जोहिला बीच की राह चुनती हुई
कभी नर्मदा की समानांतर, कभी सोन की ओर बढ़ती रही,
और अंततः सोन से आ मिली।

यह कथा केवल नदी की नहीं, **स्त्री के स्वाभिमान और आत्मबल की भी कथा है**।
नर्मदा ने न केवल अपने प्रेमी को छोड़ा,
बल्कि जीवनभर *कुँवारी रहने का संकल्प लिया* -
उस संकल्प की गूँज आज भी उनके प्रवाह में सुनाई देती है।

सौंदर्य और आध्यात्मिकता का संगम
अमरकंटक की पहाड़ियों पर बैठकर जब मैंने नर्मदा के प्रवाह को निहारा,
तो वह केवल जल नहीं लग रहा था,
बल्कि एक **जीवित इतिहास** था - जिसमें प्रेम, वेदना, त्याग और अनुशासन बह रहा था।
सूर्यास्त के समय जब किरणें नर्मदा के जल पर बिखरती हैं,
तो लगता है जैसे प्रकृति स्वयं उनके संकल्प को नमन कर रही हो।
उन लहरों में मुझे केवल एक नदी नहीं, एक **नारी की अस्मिता का प्रवाह** दिखाई दिया।

सोन कुंड - जहाँ प्रेम ने आकार लिया
नर्मदा कुंड से थोड़ी दूरी पर है सोन कुंड,
जहाँ पत्थरों के बीच से फूटती पतली धाराएँ
भविष्य के विशाल प्रवाह की घोषणा करती प्रतीत होती हैं।
वहीं खड़े होकर लगा -
जैसे सोन आज भी नर्मदा को पुकार रहा है।
उसकी हर लहर में पछतावे की नमी है,
और हर मोड़ पर अधूरे प्रेम की आह।

वापसी — जब नदी ने खुद बात की
देहरी लौटते समय पुल पर खड़ा होकर सोन की लहरों को देखा,
तो लगा वे मुझसे कह रही हों -
"मैं वही सोन हूँ, जो अमरकंटक से निकली थी।
नर्मदा के लिए बह निकली,
पर अब हर तट, हर नगर में उसकी याद बनकर जीती हूँ।"

उस क्षण समझ आया -
प्रेम का सच्चा अर्थ मिलन नहीं, प्रवाह है।
वह प्रवाह जो युगों तक बहता रहता है -
कभी नदी बनकर,कभी कहानी बनकर।

उपसंहार - नदी नहीं, आत्मा की यात्रा
अमरकंटक की यह यात्रा मेरे लिए केवल भौगोलिक नहीं थी -
यह आत्मा की यात्रा थी।
अब जब भी मैं देहरी के पुल पर खड़ा होकर सोन की ओर देखता हूँ,
उसकी हर लहर मुझे याद दिलाती है -
"कभी किसी ने प्रेम किया था, इतना सच्चा कि दिशा बदल गई।"

रणविजय सिंह
वरिष्ठ जन संपर्क अधिकारी

हिंदी उस भाषा का नाम है, जिसे इस देश के करोड़ों लोग अपनी भाषा समझते हैं और जो इस देश के महान गौरव का प्रतीक है।

- रामधारी सिंह दिनकर

हिंदी केवल एक भाषा ही नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति की आत्मा है।

- महादेवी वर्मा

मानव मात्र की सेवा के लिए हिंदी एक सुदृढ़ सेतु है।

- मैथिलीशरण गुप्त

आईआरएफसी कार्यालय में आयोजित हिंदी कार्यशाला की झलकियां (दिनांक: 09 जून, 2025)













एनटीपीसी और आईआरएफसी के बीच ऋण समझौते पर हस्ताक्षर समारोह (दिनांक: 10 जून, 2025)





श्री अरविंद बाबू, महाप्रबंधक (वित्त), एनटीपीसी और श्री सुनील कुमार गोयल, समूह महाप्रबंधक (वित्त), आईआरएफसी द्वारा ऋण समझौते पर हस्ताक्षर किए गए।




एनटीपीसी
NTPC


Loan Agreement Signing Ceremony

आईआरएफसी कार्यालय में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, 2025 की झलकियां (दिनांक: 21 जून, 2025)









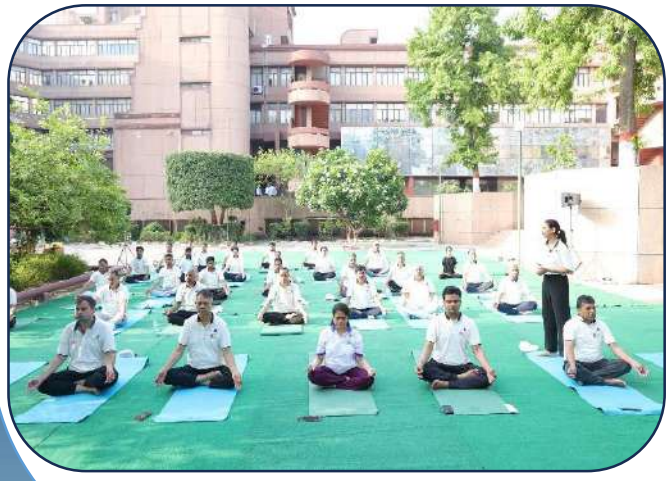



आईआरएफसी कार्यालय में आयोजित 109वीं राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की झलकियां (दिनांक: 26 जून, 2025)









अपर सदस्य राजस्व, डॉ. नवल के. श्रीवास्तव के विदाई समारोह की झलकियां (दिनांक: 26.06.2025)





आईआरएफसी कार्यालय में स्वच्छता अभियान के तहत आयोजित नुक्कड़ नाटक की झलकियां (दिनांक: 11.08.2025)








INDEPENDENCE DAY CELEBRATION - 2015



अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री मनोज कुमार दूबे प्रशंसा पत्र देते हुए



कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन एवं प्रशासन), श्री मनीष चंद्र प्रशंसा पत्र देते हुए

आईआरएफसी कार्यालय में स्वच्छता अभियान के तहत पौधारोपण की झलकियां (दिनांक: 11.08.2025)






Indian Railway Finance Corporation Limited
स्वतंत्रता दिवस समारोह




Indian Railway Finance Corporation Limited
स्वतंत्रता दिवस समारोह


Indian Railway Finance Corporation Limited
स्वतंत्रता दिवस समारोह
स्वछता अभियान - 2025


Indian Railway Finance Corporation Limited
स्वतंत्रता दिवस समारोह
- 2025



कविता

मौसम

हवाएं उदास हैं
फूल मूरझाए हुए
दिल पूछता है ये हम
कहाँ आ गए
हर तरफ निराशा और
मायूसी है छाई हुई
जो थे अपने वे
पराये हुए जाते हैं
रिश्तों को बचाने की कोशिश में
हम ठगे से रह जाते हैं
रोशनी की तलाश सबको है फिर
आशाओं की लौ क्यूँ नहीं जलाई गई
मायूसिओं से तो जिंदगी नहीं जी जाती
दूसरों का दामन जला के तो
खुशियाँ नहीं आती
इंतजार हम किसका कर रहे हैं
चमन को सँवारने के लिए
कि मरना पड़ता है जन्नत पाने के लिए
आओ बदलें खुद को कि
जमाना भी बदलेगा
प्यार की खुशबुओं से ये
जमाना फिर महकेगा
कोई हमें पागल कहे तो क्या है
ये पागल ही जमाना बदलेगा

क्षमा जैन
पत्नी श्री सचिन कुमार जैन
प्रबंधक (वित्त)

कविता

आज़ादी

हम आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाये,
स्वतंत्रता की क्या है कीमत दोहराएं;
जिन्होंने तन मन किया अर्पण मातृ-भूमि की खातिर,
उन शूर वीरों की यशो गाथाएँ गाए।।

जिन्होंने हंसी-हंसी मैदान-ए-जंग सजाया,
तिरंगा लहराने अपना लहू बहाया;
आज़ादी की राह पर हुए लाखों गुमनाम,
उन वीरों के चरणों में शत् शत् प्रणाम!

लाखों करोडो हमनें जानें गंवाई,
तब जाकर आज़ादी की सौगात पायी।
तो कैसा है स्वाधीन भारत, आपको दिखाये,
इन सालों में हुई जो समृद्धि बताये।।

गरीबी और INFLATION पर नियंत्रण हुआ है,
REPO RATE घटा पर REPO देश का बढ़ा है।
आज़ादी की हवाओं का ही लगता है जादू,
SELF-RELIANT बनकर आज भारत खड़ा है।।

FREE TRADE AGREEMENT UK से हुआ है,
NIFTY ने नई ऊंचाइयों को छुआ है।
वैश्विक स्तर पर 4TH LARGEST ECONOMY,
और INVESTMENT DESTINATION आज भारत बना है।।

सामने हो MALDIVES या CHINA, CANADA,
उसूलों से अपने ना डिगने का है वादा।
OPERATION SINDOOR ने बजाया बिगुल इंक्लाब,
छेड़ी बेखौफ जंग आतंक के खिलाफ।।

ना TARIFF की चिंता ना PENALTY का FEAR,
ना NUCLEAR की धमकी ही हमने करी BEAR;
ले FUEL किससे कितना ये भी फैसला हमारा,
यही आज़ादी का जयघोष, यही स्वतंत्रता का नारा।।

स्वतंत्र भारत का अब व्यक्तित्व यूं इठलाये,
वंदे भारत नमो भारत की ट्रेनें चलाये।
प्रगति को गति ... गतिशक्ति दिलाये,
आईआरएफसी को भी CONTRIBUTORY बनाये।।

जो देश के विकास में अहम् भूमिका निभाए,
FUTURE देशवासियो को TRACK पर ले आये।
तो बातें अब दो .. आईआरएफसी की हो जाए;
समूह छोटा सा, पर काम बड़ा कर दिखाये।।

पहले RAILWAYS को ही हम करते थे LENDING,
जो भी था यही था सब, LEASING FUNDING BRANDING...
HONORABLE CMD ने जबसे दायरे बढ़ाये
पूरे ECO SYSTEM में अब आईआरएफसी है TRENDING...।।

FUNDING का FUNDA बनाया है ऐसा,
होगा RAILWAY से LINK तो दे देंगे पैसा।
INFRA ENERGY COAL, सबमें करेंगे योगदान,
हम GROWTH का बन ENGINE, बढ़ाएंगे देश की शान।।

इस पावन धरती की हम आन बढ़ाएँगे,
सत्कर्म से तिरंगे की शान सजाएँगे।
मेहनत से ऊँचा करेंगे आईआरएफसी का नाम,
इसी जरिये आ जायेंगे हम देश के काम।।

रूपल जैन
प्रबंधक (वित्त)

लेख

प्रदूषण... एक आपदा या अवसर

प्रदूषण—एक ऐसा शब्द जो हमारे पर्यावरण, स्वास्थ्य और भविष्य पर एक गहरा धब्बा है। लेकिन एक विचित्र मोड़ में, कुछ लोग इसे 'विकास का byproduct' कहकर, यहाँ तक कि 'नौकरियों का सृजनकर्ता' मानकर इसके नकारात्मक प्रभावों को छिपाने की कोशिश करते हैं।

क्या आप जानते है नकारात्मकता के कारण हमारे देश में कितनी नौकरियां चल रही हैं?

यह व्यंग्यात्मक दृष्टिकोण हमें मजबूर करता है कि हम उन सभी तथाकथित 'लाभों' पर विचार करें जो प्रदूषण के कारण अप्रत्यक्ष रूप से पनपते हैं।

नौकरी चाहिए? वायु शुद्धिकरण प्रणाली के विक्रेता बनें! वायु प्रदूषण से हमें सांस लेने में कठिनाई हो रही है, लोग स्वच्छ हवा के लिए पैसे देने को तैयार हैं।

- पर्यावरण विज्ञान में डिग्री है? बधाई! आप अब प्रदूषण फैलाने वाली कंपनी में काम कर सकते हैं और फिर... ... गंदगी साफ कर सकते हैं!

- कारें पसंद हैं? बढ़िया! आप एक कार चला सकते हैं और प्रदूषण में योगदान कर सकते हैं। सार्वजनिक परिवहन की आवश्यकता किसे है, वैसे भी?

प्रदूषण: नौकरियों का सृजनकर्ता' (एक छल!)

यह तर्क दिया जाता है कि प्रदूषण एक अंतहीन नौकरी मशीन है।

जरा सोचिए:

- स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र: प्रदूषण से संबंधित बीमारियों (जैसे श्वसन संबंधी समस्याएं, कैंसर) के बढ़ने से डॉक्टरों, नर्सों और दवा निर्माताओं की माँग बढ़ जाती है।
- प्रौद्योगिकी और उद्योग: वायु और जल शुद्धिकरण प्रणालियों के निर्माण, बिक्री और रखरखाव के लिए हजारों इंजीनियरों, तकनीशियनों और विक्रेताओं की आवश्यकता होती है।
- पर्यावरण परामर्श: प्रदूषण फैलाने वाली कंपनियों को नियामक मानकों का पालन करने और 'सफाई' करने के लिए पर्यावरण वैज्ञानिकों और सलाहकारों को काम पर रखना पड़ता है।अन्य: मास्क, एयर प्यूरीफायर (Air Purifier) और प्रदूषण-रोधी उपकरणों का एक विशाल बाज़ार बन जाता है।
- संक्षेप में, यह एक ऐसी अर्थव्यवस्था को जन्म देता है जहाँ पहले समस्या पैदा की जाती है, और फिर उसे ठीक करने के लिए पैसा खर्च किया जाता है।

सच्चाई: यह एक महँगा अभिशाप है

लेकिन इस 'छद्म वरदान' की कीमत क्या है? यह समझना महत्वपूर्ण है कि ये नौकरियाँ और व्यवसाय उस विनाश की लागत पर आधारित हैं जो प्रदूषण पैदा करता है।

- स्वास्थ्य लागत: प्रदूषण से होने वाली बीमारियों के इलाज में लगने वाला खरबों रुपया देश की उत्पादकता और विकास को रोकता है।
- जीवन की गुणवत्ता: स्वच्छ हवा और पानी मूलभूत मानव अधिकार हैं। प्रदूषण इन अधिकारों को छीनकर, नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता को बुरी तरह प्रभावित करता है। प्रदूषण हमारे ग्रह की दीर्घकालिक स्थिरता के लिए एक गंभीर खतरा है, जिसका आर्थिक मूल्यांकन असंभव है।

अंत में, प्रदूषण कोई 'वरदान' नहीं है, बल्कि एक महँगा और घातक अभिशाप है। एक स्वस्थ और टिकाऊ समाज वह है जो समस्याओं को पैदा करने के बजाय, उन्हें जड़ से खत्म करने के लिए निवेश करता है। हमें अस्थायी नौकरियों के बजाय स्थायी प्रथाओं और स्वच्छ ऊर्जा की दिशा में काम करना चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ियों को विनाशकारी प्रभावों से बचाया जा सके। प्रदूषण को एक अच्छा विषय मानें और इसके कारण मिलने वाली नौकरियों और व्यवसाय का आनंद लें। लेकिन, गंभीरता से, प्रदूषण एक गंभीर मुद्दा है जिसे संबोधित करने की आवश्यकता है। आइए स्थायी प्रथाओं को बनाने और अपने कार्बन पदचिह्न को कम करने की दिशा में काम करें।

मनोज कुमार
उप प्रबंधक (प्रशासन)

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल। बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।

- भारतेंदु हरिश्चंद्र

लेख

हिंदी दिवस

14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को भारत की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया था। वर्ष 1953 में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा ने 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाए जाने का प्रस्ताव दिया था। तब से यह दिन हिंदी दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। यह दिन राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने तथा भारत के विविध भाषायी समुदायों को एक साथ लाने में हिंदी के महत्व को रेखांकित करता है। इसका उद्देश्य हमारी सांस्कृतिक जड़ों को मजबूत बनाने और लोगों को हिंदी भाषा के उपयोग और महत्व के बारे में जागरूक करना है।

हिंदी भाषा के विकास में समाज और संस्कृति की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारत की प्राचीन भाषा संस्कृत रही है और इसी भाषा के विभिन्न कालखंडों में हिंदी का निरंतर विकास हुआ है। संस्कृत भाषा से पालि...पालि से प्राकृत...प्राकृत से अपभ्रंश...अपभ्रंश से अवहट्ट...अवहट्ट से पुरानी हिंदी और पुरानी हिंदी से आधुनिक हिंदी का विकास हुआ है। अपनी विकास यात्रा में हिंदी ने अन्य क्षेत्रीय और विदेशी भाषाओं के प्रचलित शब्दों को अपने भीतर समाविष्ट किया है। इससे हिन्दी का शब्दकोश अत्यंत समृद्ध हुआ है।

हिंदी समस्त भारत में आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक संपर्क माध्यम के रूप में प्रयोग के लिए सक्षम है तथा यह सारे देश को एक सूत्र में पिरोती है। यद्यपि हिन्दी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया जा चुका है परंतु आजादी के बाद दक्षिण भारतीय राज्यों के विरोध के कारण इसे अंग्रेजी के साथ ही राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में आधिकारिक उद्देश्यों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी के उपयोग को निर्धारित करने के लिए वर्ष 1963 में राजभाषा अधिनियम पारित किया गया। वर्ष 1967 में इसे संशोधित किया गया। राजभाषा हिंदी के संवैधानिक और कानूनी प्रावधानों को लागू करने के लिए गृह मंत्रालय के एक स्वतंत्र विभाग के रूप में 1975 में राजभाषा विभाग की स्थापना की गई। राजभाषा अधिनियम 1976 के तहत भारत के विभिन्न राज्यों को उनकी राजभाषाओं की व्यापकता के आधार पर "क", "ख" और "ग" नामक तीन क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया। इस के तहत हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर अनिवार्य रूप से हिन्दी में ही दिया जाना है। यह अधिनियम भारत सरकार के कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने तथा इसे विनियमित करने के लिए बनाया गया है। इस अधिनियम में 1987, 2007 और 2011 में संशोधन किए गए हैं।

आजादी के 79 वर्ष पूरे होने के बावजूद हिन्दी को राजभाषा के रूप में अपना सम्मान बनाए रखने के लिए अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। सबसे बड़ी चुनौती है कि इसे अभी राष्ट्रभाषा का दर्जा नहीं मिला है। उच्च शिक्षित अभिजात्य वर्ग को हिन्दी बोलने में शर्म और हिचक महसूस होती है। हिन्दी भारत की सार्वभौमिक समाज भाषा नहीं है परंतु सभी क्षेत्रीय भाषाओं में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा हिन्दी ही है। हिन्दी भाषा के समक्ष दूसरी चुनौती यह है कि यह अभी तक रोजगार की भाषा नहीं बन पाई है। सभी मल्टीनेशनल कंपनियों के दैनिक कामकाज से लेकर कार्य संचालन की भाषा अंग्रेजी ही है। यह भी सत्य है कि भारत में उच्च शिक्षा और तकनीकी शिक्षा का माध्यम अधिकतर अंग्रेजी ही है। हिन्दी भाषा की स्थिति ऐसी हो गई है कि इसके प्रयोग-प्रसार के लिए जागरूकता लाने हेतु विभिन्न सेमिनार, समारोह और कार्यक्रमों का सहारा लेना पड़ रहा है।

यद्यपि हिन्दी के प्रयोग-प्रसार के समक्ष अनेक चुनौतियां हैं। परंतु यह प्रसन्नता की बात है कि इंटरनेट के बढ़ते इस्तेमाल ने हिन्दी भाषा के भविष्य को भी संवारा है और एक नई राह दिखाई है। हिन्दी को सूचना प्रौद्योगिकी से जोड़कर नित नए पहलकार्यों द्वारा सरकारी कामकाज और व्यापार की भाषा बनाने का सतत प्रयास किया जा रहा है। सरकारी कार्यालय में राजभाषा नीति को कार्यान्वित करने के लिए प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भावना से हिन्दी का प्रयोग-प्रसार किया जा रहा है।

यदि राजभाषा हिन्दी की वैश्विक स्थिति के बारे में बात की जाए तो यह विश्व के 150 से अधिक देशों में प्रयोग की जा रही है। इसके अलावा यह विश्व की सबसे अधिक बोली जाने वाली दूसरी भाषा है। हिन्दी ने विश्व-पटल पर भी अपनी महत्ता सिद्ध की है। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 11 जून, 2022 को हिन्दी को भी अपनी आधिकारिक भाषा घोषित किया था। अब संयुक्त राष्ट्र की सूचनाएं हिन्दी में भी जारी हो रही हैं।

सरकारी कामकाज में हिन्दी को प्रेरणा, प्रोत्साहन तथा सद्भावना से बढ़ाया जा रहा है। अंग्रेजी भाषा का सर्वत्र वर्चस्व होने पर भी राजभाषा हिन्दी ने सूचना प्रौद्योगिकी की सहायता से अपना विकास करते हुए प्रत्येक क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज कर दी है। मार्ग में आने वाली अनेक बाधाओं के बावजूद हिन्दी निरंतर प्रगति-पथ पर अग्रसर है।

अजय कक्कड़
सहायक प्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन)

हिंदी केवल भाषा नहीं, भारत की आत्मा की अभिव्यक्ति है।

- रामधारी सिंह 'दिनकर'

हिंदी जन-जन की भाषा है, इसमें जीवन की सच्ची धड़कन सुनाई देती है।

- हरिवंश राय बच्चन

आईआरएफसी कार्यालय में स्वच्छता अभियान की झलकियां (दिनांक: 11.08.2025)










Indian Railway Finance Corporation Limited
स्वतंत्रता दिवस समारोह
स्वच्छता अभियान - 2025


Indian Railway Finance Corporation Limited


Indian Railway Finance Corporation Limited


Indian Railway Finance Corporation Limited

आईआरएफसी कार्यालय में स्वच्छता अभियान के तहत जागरूकता के लिए हस्ताक्षर अभियान की झलकियां (दिनांक: 11.08.2025)






Future on Track
Indian Railway Finance Corporation Limited
A Navratna PSU, under Ministry of Railways, Government of India
SWACHHATA ABHIYAN - 2025
SIGNATURE CAMPAIGN
NBCC Place, Lodhi Road, New Delhi


Future on Track
Indian Railway Finance Corporation Limited
A Navratna PSU, under Ministry of Railways, Government of India
SWACHHATA ABHIYAN - 2025
SIGNATURE CAMPAIGN


Future on Track
Indian Railway Finance Corporation Limited
A Navratna PSU, under Ministry of Railways, Government of India
SWACHHATA ABHIYAN - 2025
SIGNATURE CAMPAIGN


Future on Track
Indian Railway Finance Corporation Limited
A Navratna PSU, under Ministry of Railways, Government of India
SWACHHATA ABHIYAN - 2025
SIGNATURE CAMPAIGN
NBCC Place, Lodhi Road, New Delhi


Future on Track
Indian Railway Finance Corporation Limited
A Navratna PSU, under Ministry of Railways, Government of India



आईआरएफसी कार्यालय में स्वच्छता अभियान के तहत शपथ समारोह की झलकियां (दिनांक: 11.08.2025)




nited
of India




कॉरपोरेशन लिमिटेड
INDIAN RAILWAY FINANCE CORPORATION LTD.
Indian Railway Finance Corporation Limited


FINANCE CORPORATION LTD


2025



आईआरएफसी कार्यालय में आयोजित स्वतंत्रता दिवस की झलकियां (दिनांक: 15.08.2025)












Rise
INDIAN RAILWA


Rise
1st Floor, East
NBCC Place, Lodhi
New Delhi-1
INDIAN RAILWAY FINANCE CORPORATION


इंडियन रेलवे फाइनेंस कॉरपोरेशन लिमिटेड
Indian Railway Finance Corporation Limited
Indian Railway Finance Corporation Limited
79वां स्वतंत्रता दिवस
79th Independence Day
15 August 2025




Indian Railway Finance Corporation Limited











आईआरएफसी कार्यालय में आयोजित स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर हिंदी की गृह पत्रिका "उड़ान" के सातवें अंक के विमोचन की झलकियां (दिनांक: 15.08.2025)





नराकास की छमाही बैठक में छमाही ई-पत्रिका "उड़ान" के लिए आईआरएफसी को प्राप्त शील्ड पुरस्कार

(दिनांक: 20.08.2025)



आईआरएफसी द्वारा आयोजित 38वीं वार्षिक आम बैठक की झलकियां (दिनांक: 30.08.2025)














38वां वार्षिक सामान्य बैठक
38TH ANNUAL GENERAL MEETING




38TH ANNUAL GENERAL MEETING


38वां वार्षिक सामान्य बैठक


38वां वार्षिक सामान्य बैठक



लेख

रेल - भारत की जीवन रेखा

— भारत की एकता, प्रगति और भावनाओं का प्रतीक

भारत एक ऐसा देश है जहाँ सैकड़ों भाषाएँ बोली जाती हैं, असंख्य संस्कृतियाँ साथ-साथ सांस लेती हैं और भूगोल हजारों मीलों तक फैला है। लेकिन इन सबके बीच जो डोर हमें जोड़ती है — वह है **भारतीय रेल**। यह सिर्फ एक यातायात का साधन नहीं, बल्कि भारत की धड़कन, स्मृतियों का सफर और सपनों की पटरियों पर दौड़ती ज़िंदगी है।

इतिहास की पटरियों से

भारतीय रेल का सफर 16 अप्रैल 1853 से शुरू हुआ, जब मुंबई से ठाणे के बीच पहली ट्रेन चली थी। यह यात्रा केवल 34 किलोमीटर लंबी थी, पर इसने भारत को एक नई दिशा दी। धीरे-धीरे रेल ने नदियों, पहाड़ों और रेगिस्तानों को पार करते हुए पूरे देश को एक सूत्र में पिरो दिया।

स्वतंत्रता संग्राम के दौर में रेल ने एकता और संवाद का माध्यम बनकर राष्ट्र की चेतना को गति दी। यही कारण है कि रेल आज भी **राष्ट्रीय एकता और सामूहिकता** का प्रतीक मानी जाती है।

देश को जोड़ने वाली डोर

रेल की पटरियाँ केवल लोहे की नहीं होतीं — वे रिश्तों, भावनाओं और उम्मीदों की पटरियाँ हैं। उत्तर से दक्षिण तक, पूर्व से पश्चिम तक — हर डिब्बे में सैकड़ों कहानियाँ चलती हैं।

कोई किसान अपने बेटे से मिलने जा रहा है, कोई माँ अपने बच्चे को स्कूल छोड़ने, कोई मजदूर नए शहर में काम की तलाश में। रेल का हर सफर हँसी, आँसू और सपनों से बुना एक मानवीय अनुभव है। यही वह यात्रा है जहाँ अजनबी भी दोस्त बन जाते हैं और दूरी भी दिलों के बीच की नजदीकी में बदल जाती है।



विकास की रफ्तार

भारतीय रेल ने देश की अर्थव्यवस्था को नई गति दी है। जहाँ रेल पहुँची, वहाँ बाज़ार पहुँचा। गाँवों के अनाज, कपड़ा, हस्तशिल्प और खनिज शहरों तक पहुँचे, और शहरों की मशीनें गाँवों तक। रेलवे ने केवल लोगों को नहीं जोड़ा, बल्कि **रोज़गार, व्यापार और शिक्षा** के अवसरों को भी विस्तृत किया। आज जब वंदे भारत एक्सप्रेस या बुलेट ट्रेन की चर्चा होती है, तो वह केवल तकनीकी प्रगति का संकेत नहीं, बल्कि एक ऐसे देश की कहानी है जो हर दिन तेज़ी से आगे बढ़ना चाहता है।

मानवीय पहलू

रेलवे केवल लोहे और इंजन की दुनिया नहीं है — इसके पीछे हजारों मेहनतकश लोगों का परिश्रम छिपा है। ट्रैकमैन जो तपती धूप में पटरियाँ सीधी करते हैं, गार्ड जो हर सफर की सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं, और स्टेशन मास्टर जो यात्रियों की सुविधा के लिए दिन-रात तत्पर रहते हैं — ये सभी उस विशाल प्रणाली की अनसुनी रीढ़ हैं। हर ट्रेन के समय पर पहुँचने के पीछे उनकी मेहनत, अनुशासन और समर्पण छिपा होता है। जब ट्रेन अपनी मंज़िल पर पहुँचती है, तो वह केवल एक यात्रा नहीं, बल्कि विश्वास की डिलीवरी होती है।

गाँव और शहर के बीच की कड़ी

रेल ने गाँव और शहर के बीच की दूरियाँ मिटा दी हैं। कोई युवा नौकरी की तलाश में रेल पकड़कर शहर पहुँचता है, तो वही रेल त्यौहारों पर उसे घर वापस भी ले आती है। रेलवे प्लेटफ़ॉर्म केवल यात्राओं के पड़ाव नहीं, बल्कि मिलन और बिछड़ने की भावनाओं के साक्षी हैं। किसी माँ की आँखें तब चमक उठती हैं जब वह अपने बेटे को ट्रेन से उतरते देखती है, और किसी बच्चे के लिए ट्रेन हमेशा एक जादू की तरह होती है।

हरित और आधुनिक भारत की ओर

आज भारतीय रेल **आधुनिकता और सतत विकास** की दिशा में तेज़ी से अग्रसर है — इलेक्ट्रिक ट्रेनों का विस्तार, सौर ऊर्जा का प्रयोग, बायो-टॉयलेट्स और स्वच्छ स्टेशन इसका उदाहरण हैं। "स्वच्छ रेल, स्वच्छ भारत" जैसी पहलें यह दर्शाती हैं कि रेलवे केवल यात्रा नहीं करवा रहा बल्कि पर्यावरण संरक्षण और हरित भविष्य की दिशा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

स्मृतियों की रेलगाड़ी

हर भारतीय के दिल में रेल यात्रा से जुड़ी कोई न कोई याद होती है — बचपन की छुट्टियों में दादी-नानी के घर का सफर, प्लेटफ़ॉर्म पर चाय और समोसे की खुशबू, या खिड़की से गुजरते खेत, नदियाँ और पहाड़। रेल यात्रा ने हमें सिखाया है कि **सफर भी उतना ही खूबसूरत होता है जितनी मंज़िल**। भारतीय रेल केवल परिवहन का तंत्र नहीं, बल्कि भारत की आत्मा की गति है। हर सीटी, हर स्टेशन, हर डिब्बा — एक कहानी कहता है, जो हमें याद दिलाती है कि यह देश साथ चलने की ताकत से बना है। जब रेलगाड़ी पटरियों पर दौड़ती है, तो लगता है मानो भारत का हृदय धड़क रहा हो — गाँवों से निकलकर शहरों की ओर, और अतीत से निकलकर उज्जवल भविष्य की ओर।

भारतीय रेल सच में — **भारत की जीवन रेखा** है, क्योंकि यह केवल यात्राएँ नहीं कराती, यह लोगों को जोड़ती है, सपनों को गति देती है और देश को आगे बढ़ाती है।

रोहन श्रीवास्तव
सहायक (हिंदी अनुवादक)

लेख

कॉर्पोरेट कैनवास पर नारी की नई पहचान: परिधान से प्रोफेशनलिज़्म तक

परिचय : बदलते दौर की नई तस्वीर

आज के बदलते कॉर्पोरेट माहौल में नारी केवल कार्यक्षेत्र की सहभागी नहीं, बल्कि उस संस्कृति की आधारशिला बन चुकी है, जो आत्मविश्वास, सलीके और सशक्तिकरण की नई परिभाषा गढ़ रही है। जहाँ पहले महिलाओं की उपस्थिति दफ्तरों में सीमित थी, वहीं अब वे नेतृत्व, नवाचार और प्रबंधन के हर क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बना रही हैं।

इस नई पहचान का एक प्रमुख पहलू है — **उनका परिधान और उसमें झलकती कार्यकुशलता।**

परिधान: व्यक्तित्व की पहली झलक

कहा गया है, "पहला प्रभाव ही अंतिम प्रभाव होता है।"

कॉर्पोरेट दुनिया में यह बात बिल्कुल सही बैठती है।

महिलाओं का परिधान अब केवल फैशन या सुंदरता का प्रतीक नहीं, बल्कि उनके आत्मविश्वास, गंभीरता और काम करने के तरीके का दर्पण बन चुका है।

साड़ी, सूट, फॉर्मल शर्ट या ब्लेज़र जैसे औपचारिक वस्त्र अब एक मानक बन गए हैं। ये न केवल अनुशासन और सलीके का परिचय देते हैं, बल्कि व्यक्तित्व को भी सशक्त बनाते हैं।

कामकाज में सलीके और समझ की पहचान

कामकाज में कुशलता केवल काम पूरा करने तक सीमित नहीं, बल्कि इसमें व्यवहार, संवाद और दृष्टिकोण भी शामिल हैं।

आज की नारी समय की पाबंदी, स्पष्ट बोलचाल, टीम भावना और नेतृत्व की क्षमता से अपने कार्यस्थल में अलग स्थान बना रही है। उनका सुसज्जित परिधान इस आत्मविश्वास को और निखारता है — मानो कहता हो, "मैं तैयार हूँ हर चुनौती के लिए।"

परंपरा और आधुनिकता का संतुलन

भारतीय नारी की सबसे बड़ी शक्ति है उसका संतुलन — जहाँ वह अपनी परंपराओं से जुड़ी रहती है, वहीं आधुनिक सोच को भी सहजता से अपनाती है। कॉर्पोरेट परिधान में भी यही समरसता झलकती है। कई महिलाएँ साड़ी या इंडो-वेस्टर्न फॉर्मल्स को इस तरह अपनाती हैं कि वे न केवल आधुनिक दिखती हैं, बल्कि अपनी सांस्कृतिक जड़ों को भी संजोए रखती हैं।

यही संतुलन भारतीय नारी की बहुमुखी सोच और परिपक्वता का प्रमाण है।

आत्मविश्वास: सफलता की असली चाबी

सही परिधान केवल बाहरी रूप नहीं बदलता, बल्कि भीतर आत्मविश्वास भी जगाता है। जब एक महिला सलीके और गरिमा के साथ खुद को प्रस्तुत करती है, तो उसका आत्मबल कई गुना बढ़ जाता है।

यही आत्मविश्वास उसे निर्णय लेने, नेतृत्व करने और हर परिस्थिति का सामना करने की ताकत देता है। वह अब केवल कार्यस्थल का हिस्सा नहीं, बल्कि प्रेरणा का स्रोत बन चुकी है।

निष्कर्ष: नई सदी की नई पहचान

कॉर्पोरेट कैनवास पर नारी अब किसी की छाया नहीं, बल्कि स्वयं एक पहचान है। उसके परिधान में अनुशासन है, उसके आचरण में सलीका है और उसकी सोच में नेतृत्व की चमक।

आज की नारी यह संदेश दे रही है कि सफलता केवल योग्यता से नहीं, बल्कि व्यक्तित्व की प्रस्तुति और आत्मविश्वास से भी तय होती है।

कॉर्पोरेट जगत की यह नई नारी — **सशक्त, आत्मविश्वासी और संतुलित** — आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बन चुकी है।

सच ही कहा गया है, "नारी अब केवल कार्यस्थल की सहभागी नहीं, बल्कि सफलता की परिभाषा है।"

प्रीति रानी
सहायक (प्रशासन)

भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, वह सोचने की प्रक्रिया भी है।

- अज्ञेय (सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन)

हिंदी हमारी स्वतंत्रता की चेतना और संस्कृति की पहचान है।

- सुभद्रा कुमारी चौहान

हिंदी हमारी राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक चेतना का आधार है।

- मुंशी प्रेमचंद

जयंती

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह "दिनकर"

हिंदी के एक प्रमुख लेखक, कवि एवम निबंधकार श्री रामधारी सिंह "दिनकर" जी का जन्म 23 सितंबर 1908 को बिहार के बेगूसराय जिले के सिमरिया गांव में कृषक परिवार में हुआ था। उन्होंने पटना विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में बी.ए किया था। उन्होंने संस्कृत, बांग्ला, अंग्रेजी और उर्दू का भी गहन अध्ययन किया था। वे आधुनिक युग के वीर रस के श्रेष्ठ कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं। इनका काव्य राष्ट्रीयता की भावना से उत्प्रेरित होने के कारण इन्हें युग-चरण की संज्ञा भी दी गई है। उनकी कविताओं में ओज, विद्रोह, आक्रोश और क्रांति की पुकार है। साथ ही बेहद कोमल शृंगारिक भावनाओं की अभिव्यक्ति भी है। इन दो प्रवृत्तियों का चित्रण हमें उनकी "कुरुक्षेत्र" और "उर्वशी" नामक कृतियों में मिलता है। दिनकर जी को स्वतंत्रता पूर्व एक विद्रोही कवि के रूप में माना जाता था और स्वतंत्रता के पश्चात उन्हें "राष्ट्रकवि" के नाम से जाना गया। उन्होंने 1934 से 1947 तक बिहार सरकार की सेवा में सब रजिस्ट्रार और प्रचार विभाग के उपनिदेशक पदों पर कार्य किया। 1950 से 1952 तक लंगट सिंह कॉलेज, मुजफ्फरपुर में हिंदी के विभागाध्यक्ष रहे। 1952 में जब भारत की प्रथम संसद का निर्माण हुआ तो उन्हें राज्यसभा का सदस्य चुना गया। दिनकर 12 वर्ष तक संसद सदस्य रहे। 1963 से 1965 के बीच वह भागलपुर विश्वविद्यालय के उप कुलपति के पद पर कार्यरत रहे। तत्पश्चात भारत सरकार के हिंदी सलाहकार बने। उन्हें "पद्म विभूषण" की उपाधि से भी अलंकृत किया गया। उनकी पुस्तक "संस्कृत के चार अध्याय" के लिए "साहित्य अकादमी पुरस्कार" तथा "उर्वशी" के लिए भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया। महाभारत पर आधारित उनके काव्य "कुरुक्षेत्र" को विश्व के 100 सर्वश्रेष्ठ काव्यों में 74वां स्थान प्राप्त है। रामधारी सिंह "दिनकर" स्वभाव से अत्यंत सौम्य और मृदु भाषी थे परंतु जब राष्ट्र की बात आती थी तो वह बेबाक टिप्पणी करने से कतराते नहीं थे। उन्होंने मुक्तक काव्य और प्रबंध काव्य दोनों की रचना की ।मुक्तक काव्य में कुछ गीति काव्य भी है।



कविताओं के अलावा उन्होंने निबंध, संस्मरण ,आलोचना आदि के रूप में विपुल गद्य लेखन भी किया। उनकी प्रमुख रचनाएं इस प्रकार हैं:- मुक्तक काव्य :प्रणभंग ,रेणुका, हुंकार ,रसवंती ,द्वंद गीत, सामधेनी, बापू, इतिहास के आंसू, धूप और धुंआ, मिर्च का मजा, नीम के पत्ते, सूरज का ब्याह, नील कुसुम, हारे को हरी नाम सहित दो दर्जन से अधिक संग्रह प्रबंध काव्य: कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी, मिट्टी की ओर, रेती के फूल, संस्कृति के चार अध्याय, उजली आग, वेणुवन, शुद्ध कविता की खोज, हे राम, संस्मरण और श्रृद्धाजंलियां, मेरी यात्राएं, दिनकर की डायरी आदि कृतियां रामधारी सिंह दिनकर की स्मृति में भारत सरकार द्वारा डाक टिकट भी जारी किया गया। उनकी प्रसिद्ध कविता "हिमालय" की कुछ पंक्तियां इस प्रकार है:

मेरे नगपति! मेरे विशाल!
साकार, दिव्य, गौरव विराट्,
पौरूष के पुन्जीभूत ज्वाल!
मेरी जननी के हिम-किरीट!
मेरे भारत के दिव्य भाल!
मेरे नगपति! मेरे विशाल!
युग-युग अजेय, निर्बन्ध, मुक्त,
युग-युग गर्वोन्नत, नित महान,
निस्सीम व्योम में तान रहा
युग से किस महिमा का वितान?
कैसी अखंड यह चिर-समाधि?
यतिवर! कैसा यह अमर ध्यान?
तू महाशून्य में खोज रहा
किस जटिल समस्या का निदान?
उलझन का कैसा विषम जाल?

पुष्पिंदर कौर
हिंदी सलाहकार

कहानी

वरदान

रात के लगभग साढ़े नौ बजे का समय था। भोपाल के पॉश इलाके गुलमोहर कॉलोनी की सड़कों पर सन्नाटा धीरे-धीरे फैल रहा था। घरों की बालकनियों में झिलमिलाती रोशनी, दूर कहीं भौंकता एक कुत्ता और नीले आसमान में चमकता चाँद – सब कुछ जैसे नींद की ओर बढ़ रहा था। ऐसे ही माहौल में एक सफेद बीएमडब्ल्यू कार, कॉलोनी के आख़िरी मकान 'आरोही विला' के मुख्य फाटक से भीतर दाख़िल हुई।

कार रुकते ही बाहर तैनात गार्ड संजीव तेज़ी से दौड़ता हुआ आया, सलाम ठोंका और धीमे स्वर में बोला,

"सर, एक महिला आपके लिए किसी व्यक्ति की चिट्ठी लेकर यहाँ कई घंटे से खड़ी है। साथ में उसका छोटा बच्चा भी है। बार-बार आपसे मिलने की ज़िद कर रही है, मना करने पर भी टल नहीं रही।"

कार से बाहर निकलते हुए निखिल वर्मा ने भौंहें सिकोड़ लीं।

"कौन महिला? कहाँ से आई है? किसकी चिट्ठी लेकर?"

"सर, उसने बताया कि चिट्ठी आपके पिता ने उसे दी है... और वो आपसे मदद की गुहार लगाने आई है।"

निखिल कुछ पल स्तब्ध खड़ा रहा। उसके पिता, श्री गोविंद प्रसाद वर्मा, जिनका देहांत हुए दो वर्ष हो चुके थे... ऐसे में उनके नाम से किसी चिट्ठी का आना, किसी महिला के हाथों?

"बुलाओ उसे," निखिल ने गंभीर स्वर में कहा।

संजीव गेट की ओर दौड़ा और कुछ क्षणों में एक अधेड़, थकी हुई महिला को लेकर लौटा। महिला की साड़ी पुरानी और हल्की मैली थी, पैरों में टूटी चप्पलें और गोद में एक सूखा-साँवला बच्चा। उसकी आँखों में न थकावट थी, न ही डर, बस एक प्रार्थना-सी झलक रही थी।

महिला ने कांपते हाथों से निखिल की ओर एक मुड़ी-तुड़ी चिट्ठी बढ़ाई और भर्राए स्वर में बोली,

"साहब, मेरा नाम मंजरी है... आपके पिताजी ने मुझे ये चिट्ठी देकर यहाँ भेजा है। मेरा बेटा बहुत बीमार है। गांव में कोई इलाज नहीं मिला, इसलिए आपके पास आई हूँ। बस आप इसे किसी सरकारी अस्पताल में भर्ती करवा दीजिए... बहुत बड़ी कृपा होगी।"

निखिल ने बिना कुछ कहे वह चिट्ठी ली और वहीं लॉन की बेंच पर बैठकर उसे पढ़ने लगा।

"प्रिय निखिल,

जब यह चिट्ठी तुम्हारे हाथ में पहुंचेगी, तब मैं शायद इस दुनिया में न रहूं। मंजरी नाम की यह महिला बहुत सीधी-सादी और संकट में है। यह मेरे गांव 'बरखेड़ा' की रहने वाली है। इसके पति की मृत्यु के बाद इसने अकेले अपने बच्चे को पाला है। अब इसका बेटा बीमार है और गांव में इलाज नहीं मिल पा रहा।

निखिल, अगर मेरे नाम का कुछ भी मान रखते हो तो इसकी मदद ज़रूर करना। इसे अपना ही मानना। किसी दिन किसी और की मदद तुम्हारे भी काम आएगी।

—तुम्हारा पापा,

गोविंद प्रसाद वर्मा"

निखिल की आंखों में कुछ हलचल हुई। उसने चिट्ठी को दोबारा पढ़ा और फिर मंजरी की ओर देखा। उस औरत की आँखों में आँसू भरे थे, पर चेहरे पर एक आत्मसम्मान की झलक भी थी।

"आप मेरे साथ आइए," निखिल ने कहा।

उसने तुरंत गार्ड को आदेश दिया कि महिला और बच्चे को बाहर वाले गेस्ट हाउस में ठहराया जाए और गर्म खाना भिजवाया जाए। फिर, उसने अपने फोन से डॉक्टर को कॉल किया और बच्चा देखे जाने की व्यवस्था की।

कुछ ही देर में डॉक्टर जैन अपनी गाड़ी से आए। उन्होंने बच्चे की नब्ज़ देखी, कुछ जांचें सुझाईं और एक दवा की पर्ची थमाई।

"ये बच्चा निमोनिया और कुपोषण से जूझ रहा है," डॉक्टर बोले, "इलाज समय से शुरू हुआ तो बच सकता है।"

निखिल ने पर्ची लेकर अपने ड्राइवर अर्जुन को दवाएं लेने भेजा और मंजरी से कहा,

"माताजी, आप चिंता न करें। बच्चा ठीक हो जाएगा।"

अगले कुछ दिन जैसे घर का माहौल ही बदल गया। निखिल रोज़ सुबह दफ्तर जाने से पहले बच्चे को देखता, डॉक्टर जाँच करते, और घर के स्टाफ को निर्देश देते कि महिला को कोई परेशानी न हो। गेस्ट हाउस अब अस्थायी रूप से मंजरी और उसके बेटे का घर बन गया था।

मंजरी हर रोज़ निखिल का धन्यवाद करती, पर निखिल हर बार मुस्कुरा कर टाल देता।

एक दिन मंजरी निखिल के पैर पड़ते हुए बोली,

"बाबूजी, बस इसे किसी अस्पताल में भर्ती करा देते, मैं ग़रीब औरत कहां से इलाज के इतने पैसे लाऊंगी? मेरे पास तो लौटने तक के पैसे नहीं हैं।"

निखिल ने उसे उठाते हुए कहा,

"माताजी, अब आप इस सब की चिंता छोड़ दीजिए। जो ज़रूरी होगा, मैं करूँगा।"

समय बीतता गया और लगभग एक महीने के इलाज के बाद बच्चा पूरी तरह स्वस्थ हो गया। उसका चेहरा खिल गया था, आँखों में अब चंचलता लौट आई थी। मंजरी की आँखों में भी अब आँसू नहीं, एक राहत थी। एक माँ की राहत।

अगली सुबह मंजरी अपने बेटे को तैयार करके निखिल से मिलने आई।

"बाबूजी, अब हम वापस गांव जाना चाहते हैं। आपने जो किया, वो एक बेटा ही अपनी मां के लिए करता है। मैं कैसे भूल सकती हूँ कि आपके पिताजी की वजह से ही ये सब संभव हुआ।"

निखिल ने मुस्कुराते हुए एक लिफाफा थमाया जिसमें कुछ रुपए थे, साथ ही महिला और बच्चे के लिए नए कपड़े और चप्पलें भी भिजवाईं। जाते-जाते उन्होंने एक चिट्ठी मंजरी को दी।

"इसे अपने गांव जाकर उनके हाथ में देना, जिन्होंने तुम्हें यहां भेजा था।"

मंजरी बार-बार आशीर्वाद देती, सिर झुकाए वहाँ से चल पड़ी।

बरखेड़ा गांव, दो दिन बाद।

शाम के धुंधलके में मंजरी, अपने बेटे का हाथ थामे, गांव के बुज़ुर्ग गोविंद प्रसाद शुक्ला के दरवाज़े पर पहुँची। गोविंद जी बरामदे में बैठे तुलसी को पानी दे रहे थे, जब मंजरी ने उनके हाथ में वह चिट्ठी थमाई और भाव-विह्वल स्वर में कहा,

"बाबा, आपका बेटा तो देवता निकला। कितना ख्याल रखा हमारा! आप सचमुच बहुत भाग्यशाली हैं, जो ऐसा बेटा आपको मिला।"

गोविंद जी ने चिट्ठी खोली, चश्मा लगाया और पढ़ने लगे—

"आदरणीय बाबू जी,

मैं आपको नहीं जानता और न ही कभी मिला हूँ। लेकिन जिस दिन आपकी चिट्ठी मेरे हाथ लगी, उस दिन पहली बार महसूस हुआ कि जैसे किसी ने मुझसे पितृत्व में कुछ कहा हो।

दरअसल अब इस मकान में मैं रहता हूँ, निखिल वर्मा नाम का कोई व्यक्ति नहीं। उन्होंने मकान बेच दिया है और अपना पता भी बदल लिया है। लेकिन मैंने उस चिट्ठी को एक आदेश समझा – एक बेटे की ओर से, एक पिता के नाम।

माताजी को जो मदद मिली, वह मेरा सौभाग्य है। मुझे लगता है जैसे जीवन में पहली बार किसी ने मुझ पर भरोसा किया।

कृपया उनसे कुछ मत कहिएगा। बस उन्हें आशीर्वाद दीजिए। और अगर आप मुझे अपना बेटा मान लें, तो मेरे लिए यह दुनिया की सबसे बड़ी पूँजी होगी।

सादर प्रणाम,

आपका धर्मपुत्र,
आकाश मेहता"
चिट्ठी पढ़ते हुए गोविंद प्रसाद शुक्ला की आंखें भीग गईं। उन्होंने सिर झुका लिया... उस व्यक्ति के लिए, जिसे वो जानते नहीं थे, लेकिन जिसने उनके नाम की लाज रख ली।
एक अनजान युवक ने सिर्फ एक चिट्ठी पढ़कर जो किया, वो शायद कोई अपना बेटा भी न कर पाता। मकान बेचकर चले गए असली निखिल वर्मा ने जिन जिम्मेदारियों से बचना चाहा, उन्हें इस आकाश मेहता ने वरदान मानकर निभाया।
गोविंद जी ने धीरे से आसमान की ओर देखा, और उनके होंठों से निकला
"धन्य हैं ऐसे संस्कार... और धन्य है वो धर्मपुत्र!"

साभार

हिंदी की असली शक्ति उसकी आंचलिकता में है।

- फणीश्वरनाथ 'रेणु'

हिंदी भाषा भारतीय समाज के ऐतिहासिक विकास की साक्षी है।

- डॉ. रामविलास शर्मा

भाषा वही जीवित रहती है जो समय से संवाद करती है।

- गजानन माधव 'मुक्तिबोध'

लघु कथा

ठक ठक तो होती ही रहेगी

एक आदमी घोड़े पर कहीं जा रहा था। घोड़े को जोर की प्यास लगी थी। दूर कुएं पर एक किसान बैलों से रहट चलाकर खेतों में पानी लगा रहा था। मुसाफिर कुएं पर आया और घोड़े को "रहट" में से पानी पिलाने लगा। पर जैसे ही घोड़ा झुककर पानी पीने की कोशिश करता, "रहट" की ठक-ठक की आवाज से डर कर पीछे हट जाता। फिर आगे बढ़कर पानी पीने की कोशिश करता और फिर "रहट" की ठक-ठक से डरकर हट जाता। मुसाफिर कुछ क्षण तो यह देखता रहा।

फिर उसने किसान से कहा कि थोड़ी देर के लिए अपने बैलों को रोक ले ताकि रहट की ठक-ठक बन्द हो और घोड़ा पानी पी सके।

किसान ने कहा कि जैसे ही बैल रूकेंगे कुएँ में से पानी आना बन्द हो जायेगा। इसलिए पानी तो इसे ठक-ठक में ही पीना पड़ेगा।

ठीक ऐसे ही यदि हम सोचें कि जीवन की ठक-ठक (आपा-धापी) बन्द हो तभी हम दान, पूण्य, भजन, पूजन, पाठ सन्ध्या, वन्दना आदि करेंगे तो यह हमारी भूल है।

हमें भी जीवन की इस ठक-ठक (आपा धापी) में से ही समय निकालना होगा तभी हम अपने मन की तृप्ति कर सकेंगे, वरना उस घोड़े की तरह हमेशा प्यासा ही रहना होगा।

सब काम करते हुए, सब दायित्व निभाते हुए प्रभु सुमिरन में भी लगे रहना होगा। ठक-ठक तो चलती ही रहेगी।

- साभार

हिंदी भारत की आत्मा की वाणी है।

- रामधारी सिंह 'दिनकर'

लेख

Time is Eternity / समय है शाश्वतता

कभी कहीं लिखा था—What I sincerely believe – body is an accumulation, mind is an accumulation too, but life is not an accumulation, it is a phenomena – that's happening!रेलवे बोर्ड और रेल मंत्रालय में कार्यभार ग्रहण करते ही जैसे एक विराट, सर्वव्यापक विश्व में प्रवेश हुआ— Obliteration of Boundaries; जहाँ सीमाएँ विलीन हो जाती हैं और समूचा भारत एक अखंड कार्यभूमि बनकर उभरता है। कोई प्रादेशिक रेखा नहीं, कोई परिधि नहीं—हर रेलकर्मी ही सहकर्मी, हर स्टेशन अपने घर के आँगन जैसा।

देश के अनगिनत कोनों के लोगों से जो आत्मीयता बनी, वह इतनी स्वाभाविक, इतनी सहज थी कि लगता था—वे मानो पड़ोसी हों, अपने ही घर के।

अरण्य—जोनल रेलवे के एक डिवीजन में फ़ाइनेंस ऑफिसर, अनुजवत प्रिय; स्नेह के दृढ़ बंधन में बँधा। कुछ दिन पहले उसने फ़ोन कर कहा—"दादा, एक असहज-सी विनती करूँ?"— "निःसंकोच कहो।"— "जानता हूँ, तुम मुझे कितना मानते हो, इसीलिए साहस कर रहा हूँ...

Defence Colony के क्वार्टर्स में जब हम रहते थे, हमारे घर से दो मकान बाद मेरी दीदी की सहेली—अभिनंदा दी—रहती थीं। जब मैंने माध्यमिक की परीक्षा पास की, वे दोनों M.Sc. की परीक्षा दे रही थीं। कई दिनों तक परीक्षाएँ चलीं। इसी बीच Northern Railway, Patiala में अभिनंदा दी को नौकरी मिल गई—शायद अंतिम दो परीक्षाएँ वे देना भी सकीं या नहीं...मेरे प्रति उनका स्नेह अद्‌भुत था—कभी-कभी लगता, अपनी दीदी से भी अधिक अपनापन। दीदी के प्रति पूर्ण सम्मान रखते हुए भी स्वीकार करना पड़ता है—नृत्य, संगीत, अध्ययन—हर क्षेत्र में वह दीदी से आगे थीं। शायद इसी कारण दीदी में एक सूक्ष्म, अप्रकट ईर्ष्या भी थी, जो कभी-कभी अनायास झलक पड़ती।

भाई-दूज के दिन अभिनंदा दी का हमारे घर आना—उनका हमारे बाग़ से प्रातः-सवेरे दूब चुनना, स्वयं पकवान बनाकर लाना, और उनकी कला से सुसज्जित उपहार—यह सब आज भी स्मृतियों में ताज़ा है। एक बार उपहार में दिया उनका स्वेटर आज भी मेरे संग्रह का बहुमूल्य खजाना है। दीदी का हल्का-सा मुंह बिचकाना भी उसी समय की यादों का हिस्सा है।

नौकरी मिलते ही जेष्ठू—अभिनंदा दी के पिता—रिटायर होकर अपनी इकलौती संतान के पास रहने आ गए। तब बहुत दुख हुआ था—कई दिनों तक मन भारी रहा।

डेढ़ वर्ष बाद पता चला—अभिनंदा दी ने एक पंजाबी व्यवसायी से विवाह कर लिया। आहत होकर जेष्ठू–जेष्ठी ने क्वार्टर्स छोड़ दिया, गाँव लौट गए, सभी संबंध तोड़कर!

यह भी अफ़वाहों में सुना—जेष्ठी, High Sugar की रोगी, निरंतर अनियमितता में जाकर देह-त्याग कर गईं, और जेष्ठू हरिद्वार के किसी आश्रम चले गए।

हमारे घर में तब तक अभिनंदा दी की छवि लगभग एक 'खल-नायिका' जैसी बना दी गई थी।

कोलकाता के हॉस्टल में रहकर St. Xavier's College में पढ़ते समय, एक दिन एक सहपाठी ने मुझे चिट्ठी थमा दी—पूजा की छुट्टियों के बाद कॉलेज खुलने के दिन। ट्रेन में उसकी मुलाकात अभिनंदा दी से हुई थी, और बातों-बातों में मेरा नाम आ गया।

तब न मोबाइल था, न सहज फ़ोन। चिट्ठी ही संवाद का माध्यम थी।

मित्र के सामने ही, भीगे नयनों से पत्र खोला। लिखा था—"भाई रे, तू अब वयस्क है। यदि अंतरात्मा रोके नहीं—तो इस स्वजन–विमुख दीदी से कभी संपर्क करना।"

घर में यह कहते ही सब आक्रोशित हो उठे—उन्हें लेकर कड़वी बातें भी सुननी पड़ीं। संपर्क फिर कभी न हो पाया।

नौकरी में आने के बाद पहला Privilege Pass मिलते ही मैं Patiala जा पहुँचा—घर में आधा-सच कहकर। वहाँ पता चला—अभिनंदा दी वर्षों पहले Transfer लेकर Delhi चली गई थीं—नए पते का कोई अता-पता नहीं।

"दादा, तुम तो दिल्ली में हो। Northern Railway Headquarters, Baroda House में ज़रा पता करना।मैं बस नाम बता सकता हूँ—उपनाम नहीं। इतना जानता हूँ कि गाती थीं—अथवा गाया करती थीं। और कुछ नहीं।उन्हें ढूँढ पाओ तो जीवन भर कृतज्ञ रहूँगा।"

Delhi का Baroda House—Northern Railway का मुख्यालय बनने से पहले Baroda के महाराजा का निवास—आठ एकड़ में फैला एक अनुपम Princely Palace.निर्माण में पंद्रह वर्ष लगे; स्वतंत्रता के कुछ वर्ष पूर्व पूर्ण हुआ। इसके शिल्पकार Sir Edwin Lutyens—Rashtrapati Bhavan के भी रचयिता—जिनके नाम पर Delhi का यह प्रतिष्ठित क्षेत्र Lutyens' Delhi कहलाता है।इसके गुंबद Sanchi Stupa की शैली पर आधारित, प्रत्येक मेहराब पूर्ण अर्धवृत्त—एक दुर्लभ स्थापत्य-विन्यास।कई हज़ार लोग वहाँ कार्यरत—केवल एक नाम के आधार पर किसी को खोजना मानो अनंत में सुई ढूँढना।

पिछले वर्ष Delhi के पुराने कार्यालय में रहकर, विभाग की एक सहयोगी की शादी से पहले मैंने "आईबुड़ो भात (विवाह-पूर्व भोज)(Aiburo Bhaat)" की परंपरा आरंभ की—उसके अंतिम कार्यदिवस पर।महिलाओं को ज़िम्मेदारी दी—और Raghunathpur, West Bengal से Swarnachari और Garad Sarees मँगवाए। पूरी Railway Board की महिलाओं ने इस बंगाली परंपरा को अत्यंत स्नेह से अपनाया।तब से मैं सबका Bengal Dada बन गया—इसी नाम से पुकारा जाता हूँ।उन्हीं में से एक को अरन्य का नंबर देकर अनुरोध किया—अभिनंदा देवी को ढूँढकर सूचना दे दें।

किसी को असहज करना मेरे स्वभाव के विरुद्ध; इसलिए स्वयं परिचय देने की आवश्यकता नहीं समझी। आज कार्यालय से लौटते थोड़ी देर हो गई।

Asansol में रहते शाम साढ़े सात बजे श्रीमती के साथ चाय—यह एक अविचलित अनुष्ठान था। आवश्यक चर्चा भी उसी समय होती। यदि किसी दिन मैं देर कर दूँ तो श्रीमती भी चाय न लेतीं—और उस दिन की चाय मानो समय के प्रवाह में बह जाती। आज भी, साढ़े सात के बाद चाय का कोई निमंत्रण स्वीकार नहीं करता—वह स्थान किसी और को नहीं दे सकता।

ऊपरी फ्लैट के सज्जन Club की online meeting के लिए आमंत्रित करने आए थे। Club culture अब भी मुझसे नहीं रचता—विनम्रतापूर्वक टाल दिया और उन्हें चाय दी। अकेले चाय पीने में संकोच था—किन्तु कारण समझाने पर प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर ली।वे लौट ही रहे थे कि रात सवा आठ बजे अरन्य का फ़ोन—भावनाओं से भीगा हुआ।

"दादा, आपकी कृपा से हमारी भाई–बहन की वर्षों की दूरी मिट गई! क्या आनंद है—कह नहीं सकता। आपकी भाभी भी आँसू रोक न सकीं।

और दादा—सबसे अधिक सुख मिला यह जानकर कि जेष्ठू अब उसके साथ ही हैं।

आपने पूछताछ नहीं की—सही किया। पर जो कहना था, छिपा नहीं सका—इसलिए सब कह दिया।

पर यह अवश्य कहूँ—आपने स्वयं को पूरे प्रसंग से अलग रखकर अद्वितीय विवेक और उच्च संस्कार का परिचय दिया—जैसा कि मैं आपको जानता हूँ। और आपने दीदी को भी किसी अप्रिय स्थिति से बचाए रखा—इसके लिए दीदी ने आपको हार्दिक सम्मान भेजा है।

और क्या मैं भी भावुक हो उठा? कौन जाने!

- उत्पल मज़ूमदार
परामर्शदाता

हिंदी दिवस समारोह – 2025 एवं पांचवां अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन (दिनांक: 14-15 सितंबर, 2025)





आईआरएफसी कार्यालय में हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित हिंदी निबंध प्रतियोगिता की झलकियां (दिनांक: 17.09.2025)













आईआरएफसी कार्यालय में हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित हिंदी सुलेख प्रतियोगिता की झलकियां (दिनांक: 18.09.2025)













आईआरएफसी कार्यालय में हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता की झलकियां (दिनांक: 19.09.2025)













आईआरएफसी द्वारा हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक तथा हिंदी कार्यशाला की झलकियां (दिनांक: 22.09.2025)










कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक
और




कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक











आईआरएफसी कार्यालय में हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित हिंदी चित्र-वर्णन प्रतियोगिता की झलकियां (दिनांक: 24.09.2025)













आईआरएफसी कार्यालय में हिंदी पखवाड़े के समापन और पुरस्कार वितरण की झलकियां (दिनांक: 26.09.2025)








सीएसआर से संबंधित विविध गतिविधियां

(अप्रैल – सितंबर 2025 छमाही)













अनमोल वचन

1. "हिन्दी देश की एकता की कड़ी है।" – डॉ. राजेंद्र प्रसाद89
2. "भाषा विचारों की वाहिका है।" - मुंशी प्रेमचंद
3. "हिन्दी भारत की पहचान को विश्व मंच पर स्थापित करने का सशक्त माध्यम है।" - अटल बिहारी वाजपेयी
4. "जनभाषा में ही राष्ट्र की आत्मा का सच्चा स्वर प्रकट होता है।" - विनोबा भावे
5. "हिन्दी भारत के हृदय की भाषा है।" - महात्मा गांधी



इंडियन रेलवे फाइनेंस कॉरपोरेशन

(रेल मंत्रालय का नवरत्न उपक्रम)

भविष्य पथ पर